✡ श्रीसीतारामचन्द्राभ्यां नमः ✡

❋ श्रीमते भगवते रामानन्दाचार्याय नमः ❋

॥ श्रीहनुमते नमः ॥

॥ श्रीसद्गुरवे नमः ॥

॥ श्रीमती चन्द्रकलायै नमः ॥

॥ श्रीमती चारूशीलायै नमः ॥

श्रीसीताराम उत्कण्ठा प्रकाश

ध्यान मंजरी, उज्जवल उत्कण्ठा, जुगलोत्कण्ठा प्रकाशिका, विनय चालीसी, नेह प्रकाश, सन्त विनय शतक

प्रकाशकः—

वैदेही बल्लभ शरण जी

श्रीहनुमानबाग, वासुदेवघाट, श्रीअयोध्याजी

प्रथम बार १०००) सन् २००० (मूल्य १२ रुपये

श्रीप्रीतम की प्यार

कौन हरीनाथ ने अवसर दिया सबकार नया।
हम नये आप नये नेम नया प्यार नया ॥१॥
हमसे कहलाय लिये दोष हमारे सारे।
ईश शक्ति का ये दिखलाया चमतकार नया ॥२॥
अपने सेवक के कसूरों पै उठाया खुद कष्ट।
हाय ईस लाज से है दिल पर मेरे खार नया ॥३॥
सब दिन प्यार दुलारों का नही वारा पार।
रोज पर सादि पिन्हाते हैं गले हार नया ॥४॥
हो नही सकते उऋन तौ भी न्यवछावर करके।
करोड़ो देह जो देवै मुझे करतार नया ॥५॥
मीठि बोलि पै मैं कुरवान मेरा तन मन धन।
प्यारी चितवन पै मेरा दिल है गिर्फतार नया ॥६॥
जिस कसूरों को सजा देना मुझे वाजीब थी।
उसके बदले में दिया मोद नया प्यार नया ॥७॥
ईश कोटि में भी देखे न सुनै ऐसे गुण।
नाथ मैं जैसा हर एक गुण है सुख सार नया ॥८॥
यहै अभिलाष सदा पूर्ण करैं सीताराम।
कीजिये लाखो वर्ष तक मेरा रीझवार नया ॥९॥
रहै तन मन मेरा सब नाथ की रुचि अनुकुल।
(युग्म) निविहैं सिया नाथ सो एक प्यार नया ॥१०॥

॥ श्रीसीतारामचन्द्राभ्यां नमः ॥
श्रीमते भगवते रामानन्दाचार्याय नमः
।। श्रीहनुमते नमः ।। श्रीसद्गुरवे नमः ।।
।। श्रीमती चन्द्रकलायै नमः ।। श्रीमती चारुशीलायै नमः ।।

श्रीसीताराम उत्कण्ठा प्रकाश

(ध्यान मंजरी, उज्जवल उत्कण्ठा, जुगलोत्कण्ठा प्रकाशिका
विनय चालीसी, नेह प्रकाश, सन्त विनय शतक)

प्रकाशकः—
वैदेही बल्लभ शरण जी
श्रीहनुमानबाग, वासुदेवघाट, श्रीअयोध्याजी

गुरू पूर्णिमा के शुभावसर पर १६ जुलाई २०००

पुस्तक प्राप्ति स्थानः—
वैदेही बल्लभ शरण जी
श्रीहनुमानबाग, अयोध्याजी

श्री वैदेही शरण जी
अवधेश वस्त्रालय, कटारी मन्दिर
नयाघाट, अयोध्याजी

म० श्री मैथिलीरमणशरणजी
श्रीलक्ष्मण किला, अयोध्याजी

।। श्रीसीताराम चन्द्राभ्यां नमः ।।

।। श्रीमते हनुमते नमः ।।

।। श्रीमते भगवते श्रीरामानन्दाचार्याय नमः ।।

।। श्रीसद्‌गुरू चरुण कमलेभ्यो नमः ।।

तत् पद वाच्य राम सिय, दिव्य रसन्ह की खान।
जाके रस कण लहि, ब्रह्मादिक रसखान ।१।।
अन्तर्यामि राम सिय, दिव्य सच्चिदानन्द।
प्रणतन्ह अपनाय के, करत केलि सुख कन्द ।।२।।

रसस्वरूप रससिन्धु श्रीसीतारामजू के अनुकुल कृपा दृष्टि स्वरूप आचार्यों की महामधुर रसमयी वाणियोंके देखने, स्पर्श करने तथा श्रवण करने से पाप हरता, कर्मनाशक, मोहरूपी रात्रि का नाशक है। जो श्रद्धालु हृदय में सनेह पूर्वक धारण करते हैं उसके हृदयाकाश में स्वस्वरूपाभिमान रूप सूर्योदय होता है। जो कि कोटि जन्मों के कोटि योग, यज्ञादि कर्मो से दुर्लभ है। भगवत नाम, रूप, लीलाधाम ये प्रकृतिसे (इन्द्रिय सुखानुभूति) परे है सच्चिदानन्द विग्रह है। जो श्रद्धालु इन्द्रिय संयम पूर्वक शरणागति स्वीकार करता है उसके हृदय अज्ञान को नाश कर बुद्धि योग प्रदान कर अपना अनुभूति देते है। ऐसे सहजानन्द भजन प्रायण सन्त शिरोमणि श्रीमद्‌अग्रदेवाचार्य जी, श्रीमद्‌युगलानन्यशरणजी, श्रीमद्‌शुभशीलाजी, (श्रीसीता-रामशरणजी) श्रीमद्‌रूपालताजी, श्रीमद्‌बालअलीजीके वाणियों की संग्रह है।

तीनकाल, चारयुग में एकमात्र निर्हेतुक परम हितकारी इस दुस्तर संसारमें भगवान एवं भगवान के भक्त, सन्त ही है।

"हेतु रहित जग जुग उपकारि।
तुम तुम्हार सेवक असुरारि॥"

ऐसे ही परम हित की चाहना वाले भगवत् भक्त, सन्त श्रीवैदेही बल्लभ शरणजी, श्रीहनुमानबाग, श्रीअयोध्याजी ने महामधुर, रसमयी अचार्यों की वाणियों को वर्षों से प्राणवत जोगाकर रखा था। जो आज श्रीसीताराम जू की कृपाकांक्षि श्रीमान् म० सरयूशरणजी इटावाधाम, श्रीमान् रघुपतिशरणजी टाण्डा, श्रीसीताराम लोहाटी, आसाम, शिवसागर ने सादर सप्रेम पूर्वक छपाईमें सहयोग कर धन्य के पात्र हुए। श्रीवैदेही बल्लभ शरणजी ने कृपा कर (प्रूफ) का कार्य सौपकर अनुग्रहीत किया। यथाशक्ति मैंने संशोधन किया, भूल से अशुद्धि को सुधार कर पढ़ने की कृपा करेंगे।

रामस्य नाम रूपं च लीला धाम परात्परम्।
एतच्चतुष्टयं नित्यं सच्चिदानन्द विग्रहम्॥

संशोधक-
रामदास
श्रीहनुमानबाग, अयोध्याजी



❋ विषय-सूची ❋

।। श्रीसीताराम चन्द्राभ्यां नमः ।।
।। श्रीमती सर्वेश्वरी चन्द्रकलायै नमः ।।
।। श्रीमते हनुमते नमः ।।

* ध्यान मंजरी *

-: छन्द रोला :-

सुमिरौं श्रीरघुबीर धीर रघुबंश विभूषण ।
शरण गहे सुखराशि हरत अघसागर दूषण ।। १
सुन्दर राम उदार वाण कर सारँग धारी ।
हियधरि प्रभु को ध्यान बिदुषजन आनंद कारी ।। २
अवधपुरी निज धाम परम अति सुन्दर राजै ।
हाटकमणियम सदन नगन को कांति बिराजै ।। ३
पौंरि द्वार अति चारु सुहावन चित्रित सोहैं ।
चंपतार मंदार कल्पतरु देखत मोहैं ।। ४
भवन भवन चित्राम चित्र की रंभा सोहैं ।
बनज सुतन की पाँति कांति गोखनमग जोहैं ।। ५
तोरण केतु पताक ध्वजा तहँ परम सोहाई ।
मनो रघुवर हित करन आय त्रिभुवन छबि छाई ।।६
बीथी बगर बजार रतन खँचि ज्योति उजासा ।
रहन न पावै तिमिर सहज ही होत प्रकाशा ।। ७

देखि पुरी छवि भरी मध्य के अटकत रथ रबि ।
हरषहिं बरषहिं सुमन बिबुध जन निरखि पुरीछबि ।।८
श्रीरघुवर यश भरी पुरी बर-बर की दायन ।
धर्मशील नर नारि सबै प्रभु सुयश परायन ।। ९
गावत रघुबर चरितमिलतजित तितते भामिनि ।
स्वरअसकोकिल नादरूपजनुदमकति दामिनि ।।१०
तिन युवतिन को भाग बरनि कापै कहि आवैं ।
सचि सारद नगसुता देखिकै मन ललचावैं ।। ११
अवधपुरिन की अवधि यही श्रुति संमृति बरणी ।
ध्यान धरे सुखकरनि नाम उचरत अघहरणी ।। १२
करि-करि बहुत कलेश कहत उपमा जो गुणीजन ।
अन्य उक्ति सब अल्प अवध सम अवध भले बन ।।१३
वापी कूप तड़ाग रतन सोपान बनाए ।
रहे अमल जल पूरि बिकसि कल्हार जु छाए ।। १४
शीतल तरुकी छाँह विहँग कूजत मन भाये ।
चहूँ ओर आराम लगत उपवन जु सुहाये ।। १५
तिनपर केकि कपोत कीर कोकिल किल कारत ।
सुरधरि तिनकी देह मनोप्रभु सूयश उचारत ।। १६

झूमि रहे लगि डार भार फल फूलन भारी।
पथिक जनन फल देन मनहुँ तिन भुजा पसारी ।।१७
निकटहिं सरयू सरित धरे अस उज्वल धारा।
भवसागर को तरण विदित यह पोत उदारा ।। १८
हरण पाप त्रय ताप जनन चिंतित फलदेनी।
सुकृती जन आरोह सुदृढ़ बैकुण्ठ निसेनी ।। १९
तीर नरनकी भीर लगत अस परम सुहाए।
मनहुँ ब्योम को त्यागि अमर गण सेवन आए ।।२०
करैं जो मज्जन पान धन्य बड़ भाग जनन के।
बिबिध भांतिके घाट तहां मन थकित मुनिन के ।।२१
नीर परम गम्भीर चलत गहिरे स्वर गाजैं।
तहाँ तीर बहु सघन कमल अति सुन्दर राजैं ।।२२
कमल-कमल के मध्ययूथमिलि भँवर गुंजारैं।
मानहुँ मुनिजन बृन्द वेद ध्वनि शब्द उचारैं ।।२३
त्रिबिध बयारिबहार बहुत निशदिन अघहारी।
शींतल मंदसुगंध परम अति आनंदकारी ।।२४
बोलत चकवा कुण्डतीर मनमोद बढ़ावैं।
मानहुँ परम सुदेश निकरमिलि गंधर्व गावैं ।।२५
कानन तहाँ अशोक शोक तेहि देखत भाजैं।
बिबिधि भाँति के बृक्ष सबै बृन्दारक राजैं ।।२६

साखा पत्र अनूप कहा कहौं शोभा उनकी ।
फल कुसुमन के झुंड निरखि सुधिरहति न तनकी ।२७
कल्पबृक्ष के निकट तहां यकधाम मणिन युत ।
कंचनमय सब भूमि परम अति राजत अद्‌भुत ।।२८
स्वर्ण वेदिका मध्य तहां यक रतन सिंहासन ।
सिंहासन के मध्य परम अति पदुम शुभासन ।।२९
ताके मध्य सुदेस कार्णिका सुन्दर राजै ।
अति अद्‌भुत तहँ तेज बह्निसम उपमाभ्राजै ।।३०
तामधि शोभित राम नीलइन्दीवर ओभा ।
अखिल रूप अंभोधि सजल घन तन की शोभा ।।३१
शिर पर दिव्य किरीट जटित मञ्जुल मणि मोती ।
निरखि रूचिरता लजितनिकर दिनकरकी जोती ।।३२
कुण्डल ललित कपोल जुगल अति परम सुदेशा ।
तिनको निरखि प्रकाश लजित राकेश दिनेशा ।।३३
मेचक कुटिल सुकेश सरोरुह नयन सुहाए ।
मुख पंकज के निकट मनहुँ अलि छौना आए ।।३४
भृकुटी त्रयपद दुगुन मनहुँ अलि अवलि बिराजै ।
नासा परम सुदेश बदन लखि पंकज लाजै ।।३५
चितवनि चारु कृपाल रसिक जन मन आकर्षंत ।
मन्दहास मृदुबयन जनन को आनंद बर्षंत ।।३६

दीरघ दीप्त ललाट ज्ञानमुद्रा दृढ़ धारी।
सुन्दर तिलक उदार अधिक छबि शोभित भारी।।३७
परम ललित मणिमाल हार मुक्ता छबि राजै।
उरश्रीवत्स सुचिन्ह कण्ठ कौस्तुभ मणि भ्राजै ।।३८
यज्ञोपबीत सुदेश मध्यधार जु बिराजै ।
उभय भुजा आजानु नगन जटि कंकन राजै ।।३९
चूनी रतन जराय मुद्रिका अधिक सँवारी।
शोभित अद्भुतरूप अरुणकी छबि अनुहारी ।।४०
भूषण बिबिध सुदेश पीत पट शोभित भारी।
लसतकोर चहुँओर छोर कलकञ्चन धारी ।।४१
रोमाबलि बनि आई नाभि अस लगति सुहाई।
त्रिबलीतामधिललित रेखत्रयअति छबिछाई। ४२
कटिपरदेश सुढार अधिक छवि किंकिनिराजै।
जानुपुष्टबनि गूढ़ गुल्फअतिललित बिराजै ।।४३
नूपुर पुरट सुचारु रचित मणि माणिक सोहैं।
रवकल सुरसंगीत सुनत परिजन मन मोहैं ।।४४
युगल अरुण पद पद्म चिन्हकुलिशादिकमंडित।
पद्मा नित्यनिकेत शरणगत भवभयखंडित ।।४५

दक्षिण भुज शर सुभग सुहावन सुन्दर राजैं।
दिव्या युध सुबिशाल बामकर धनुष बिराजैं ।।४६
षोडशबरष किशोर राम नित सुन्दर राजैं।
रामरूप को निरखि बिभाकरकोटिकलाजैं ।४७
अस राजत रघुवीर धीर आसन सुखकारी।
रूप सच्चिदानन्द बामदिशि जनक कुमारी ।।४८
नगन जरे छबि भरे बिबिध भूषण अस सोहैं।
सुन्दर अंग उदार बिदित चामी कर कोहैं ।।४९
अलक झलकता श्याम पीठ शोभित कलबेनी।
सुन्दरता की सींव किधौं राजति अलिश्रेनी ।।५०
रचित सुबिबिध प्रकार माँग जरतारसवांरी।
मनहुँ सुरसरी धार बनी शोभा अस भारी ।।५१
पाटनकी लर और बड़े-बड़े उज्वल मोती।
सघन तिमिरके मध्य मनो उड़गणकी जोती ।।५२
रतनरचित मणिजटित शीसपर बिन्दाछाजैं।
ललित कपोल सुयुगल कर्ण ताटंक बिराजैं ।।५३
उज्वल भालसुचारु अमितउपमा अस सोहैं।
राजत परम सोहाग भागको भवन किधौं हैं ।।५४

गोरो चनको तिलक ललित रेखा बनिआई ।
उन्नत नासा सुभग लसत बेसरि जु सुहाई ।।५५
भृकुटी नयनबिशाल सौम्य चितवनि जगपावन ।
मानहुँ बिकसित कमलबदन असलगत सुहावन ।।५६
अरुणअधर तरदशन पांति असलगति सुहाई ।
चारुचिबुकबिच तनकबिन्दु मेचक छबिछाई ।।५७
कण्ठपोति मणिजोति सुछबि मुक्ताबरमाला ।
पदिकरचितकलधौत बिराजत हृदय बिशाला ।।५८
हेमतंतु कर रचित अरुण सारी रँग झीनी ।
कंचुकिचित्रितचतुर बिबिध शोभित रँग भीनी ।।५९
वरअंगद छबिदेति बाहु अस लगति सुहाई ।
करन चुरी रंगभरी ललित मुँदरी बनि आई ।।६०
पद्मराग मणि नील जटित युग कंकणराजैं ।
मनहुँ बनज के फूल द्विरेफनि पंक्ति बिराजैं ।।६१
लहँगा कटि परदेश भाँति अतिशोभित गहरी ।
अरुण असितसित पीत मध्य नाना रंगलहरी ।।६२
हरित नगनकर जरित युगल जेहरि असराजैं ।
तिनतर घुँघुरू और अग्र बिछियाजु बिराजैं ।।६३

तिन पर नगजुअमोल ललित चूनी गणलाए।
चरण चारुतल अरुण सहज ही लगत सुहाए ॥६४
अतुलित युगल स्वरूप कवन असउपमा जिनकी।
जेतिक उपमादीप्त शक्तिकरि भासित तिनकी ॥६५
यहि बिधि राजत राम अवधपुर अवध बिहारी।
दम्पति परम उदार सुयश सेवक सुखकारी ॥६६
दक्षिण भुज रिपुदलन गौर तन तेज उदारा।
उभय हेतु अनुसार धरे ब्रत खंडित धारा ॥६७
शेष लिए कर छत्र भरत लिए चौंर ढुरावैं।
अनिल सुवनकर जोरिसु प्रभूकी कीरतिगावैं ॥६८
अपनी-अपनी ठौर नित्य परिकर बनि भारी।
सुरति शक्तिबिमलादि रहतनित आज्ञाकारी ॥६९
जो जो जेहि अधिकार सचिव सेवा मनबासैं।
बीनाधर सुरतान गानकरि प्रभुहिं उपासैं ॥७०
यही ध्यान उरधरैं स्वयंतन सुफल करेवा।
भव चतुरानन आदि चरन बन्दै सब देवा ॥७१
यह दम्पतिबर ध्यान रसिकजननितप्रतिध्यावैं।
रसिकबिना यह ध्यान और सपनेहुँ नहिं पावैं ॥७२

अमल अमृत रसधार रसिकजन यहिरस पागैं।
तेहिको नीरस ज्ञान योग तप छोई लागैं ।।७३
परमसार यह चरित सुनत श्रवन अघहारी।
ध्यान परम कल्यानसन्त जन आनंदकारी ।।७४
तिन्हैं भूलि जनि कहौ कुटिलता पंक मलिनमन।
यह उज्वल मणिमाल पहिरिहैं परम रसिकजन ।।७५
जगत ईशको रूप बरणि कह कवन अधिकमति।
कहाँ अल्प खद्योत भानुके निकट करै द्युति ।।७६
कहँ चातक की शक्ति अखिल जलचोंच समावै।
कछुक बुन्द मुख परैं ताहिलै आनन्द पावै ।।७७
सुनि आगम बिधि अर्थ कछुक जो मनहि सुहायो।
यह मंगल कर ध्यान यथा मति बरणि सुनायो ।।७८
श्रीगुरु सन्त अनुग्रहते अस गोपुर बासी।
रसिक जनन हितकरन रहसियहताहि प्रकाशी ।।७९
ध्यान मञ्जरी नाम सुनत मन मोद बढ़ावैं।
श्रीरघुवर को दास मुदितमन अग्रसोगावै ।।८०
इति श्री स्वामी अग्रदास जी कृत हयामंजरी।

ध्यान मंजरी सम्पूर्णः

उज्ज्वल उत्कण्ठा–विलास

नामोत्कण्ठा

।। दोहा ।।

श्रीसुषमा-मुदमोदनिधि, सब विधि रिधि-सिधि-दानि ।
बन्दौं बोध विचित्र, बरदायक गुर गुणखानि ।। १

मंगल–मोद–प्रमोद मृदु मूल बचन प्रिय पाय ।
पदम–पराग प्रणम्य नित रच्यो रहस दुतिदाय ।। २

श्रीसीता वल्लभ बिमल विरद निवास सुखैन ।
बन्दौं श्रीशितकंठ–पद अमल कमल मुद दैन ।। ३

श्रीगणनायक गुणनिकर गिरा–ज्ञान गतिदानि ।
बन्दौं बाग विचित्र वर बीज युगल रसखानि ।। ४

श्रीसिय–पिय–परिकर परम प्रेम प्रमोद–निवास ।
चरन–नलिन नूतन नमो पूरक उर–अभिलाष ।। ५

उर–उमंग पूरन करन हिय–आभरन विचित्र ।
बन्दौं सिय–पिय–पदपदम सदन सुराग पवित्र ।। ६

उज्वल उत्कण्ठा सुमन सन्तन सब विधि होत ।
कौन सुदिन दुति होत मम शुचि रुचि होत उदोत ।।७

नाम–रूप–गुन--धाम श्रीलीला ललित रसाल ।
कबहुँ बिपुल प्रिय लागिहैं जिमि जीवन जड़ जाल ।।८

श्रीसियवर-प्रेरित हृदय बरनौं बिसद बिलास ।
उज्वल उत्कण्ठा सरस सुनत प्रीति प्रतिकाश ।। ९
नाम-रूप-गुण-धाम-वसु-याम-विभव - वरवास ।
उज्वल उत्कण्ठा कलित वलित उछाह हुलास ।।१०
सुजन सनेही समुझिहैं शौक समेत सुबैन ।
रुच्छ तुच्छ किमि लखि सकै सिय-जीवन गुन-ऐन ।।११
बढ़ै बिना अभिलाष हिय हरित मनोहर कान्ति ।
कोटिन किये कलेश तउ नहिं सनेह - रस - यान्ति ।।१२
मनोराज युग भाँति शुचि अशुचि विचारि अचित्त ।
मोदामोद - प्रदानि वित विदित प्रकर्ष निमित्त ।।१३
ताही हेतु सचेत चित अहित वासना - बीज ।
विलप किये ध्यावहिं धवल नाम स्वरूप अतीज ।।१४
वृथा बतकही व्योम वन बूझि बिसारि बिशेष ।
प्रतिपल उत्कण्ठा अमल सजत सुमन वरवेष ।।१५
लोक शोकमय मान कहँ मानि महा मलखानि ।
नाम-रूप-गुण मन मनन सकल स्वच्छ रस छानि ।।१६
विसद दिवस ह्वैहैं कबहुँ जग-जंजाल जलाय ।
रसना रटिहौं नाम सिय-राम सुहिय हुलसाय ।।१७
घनसम गिरा गंभीर धुनि पुनि-पुनि प्रेम बढ़ाय ।
जपिहौं जीह अनीह ह्वै करन कलंक कढ़ाय ।।१८

लोक-वेद-बन्धन बिपुल विरस बिचारि विसारि ।
जपिहौं जीवन नाम वसु याम मनादिक वारि ।।१९
नवल नेहनिधि नाम मधि मीन समान सुलीन ।
रहिहौं हाय हिराय हिय हरसायत पन पीन ।।२०
महा मधुरता नाम सुखसागर रसना चाखि ।
भुक्तिमुक्ति-अभिलाष तृन-राख मानिहौं राखि ।।२१
बार–बार रसना सरस कब दैहौं उपदेश ।
रटि रमिये निज नाम-गुन-धाम-सहित आवेश ! २२
श्रीकरुणानिधि–नामगुण श्रवण समेत उछाह ।
पल-पल प्रति करिहौं कबहुँ छोड़ि-छाड़ दिल-दाह ।।२३
पलक पाव बिछुरत कबहुँ प्रान परम प्रियनाम ।
हाय हजारन हिय कबहुँ करिहौं गुनि गुन-ग्राम । २४
श्रीसद्गुरु–सतसंग रंग–राग–सदन ढिग जाय ।
कब सुनिहौं निज नाम-गुन नेह-निशान बजाय ।।२५
नामरटन करिहौं कबहुँ जिमि सरिता वरवेग ।
किये कदंब कलेश नहिं नेक निरोध सुनेग ।।२६
नाम मधुर रसना रटन चातक सम पन ठानि ।
करिहौं त्रिविध कलेश सहि चहि सुबुन्द रसखानि ।।२७
श्रीसीतावर–नाम विन विविध बतकही धूल ।
कबहुँ जानि मन मानिहौं महामोद प्रतिकूल ।।२८

सुदिन सुखद ह्वैहैं कबहुँ रसना रटन अखण्ड ।
विसद वरन नृप एकरस करिहौं होय उदण्ड ।।२९

वचन-रचन पोषन वपुष कारन हिरस हिराय ।
नाम-नेह-निधि जप सजग सजिहौं सुमन थिराय ।।३०

जेहि जन जीह जगामगित नाम लोक अभिराम ।
तेहि पद-पंकज पांसु प्रिय कब पुजिहौं निष्काम ।।३१

लोक-रंजना-ईखना त्रिविध वासना टारि ।
रमि रहिहौं कब नाम सुख सदन अपनपौ वारि ।।३२

मान-प्रतिष्ठा विखम विख-भार बिकार बिसारि ।
रटिहौं रसना रमन निधि नाम महामुद धारि ।।३३

नाम परत्व-प्रकाश कर सन्त रसिक पद पास ।
कब रहिहौं मद-मान-बिन छिन प्रति प्रीत-प्रकाश ।।३४

बीज बृक्ष वत वेद विधि विविध बीच वरनेश ।
मनन संवलित जोहिहौं हृदय हरखि वरवेश ।।३५

सदन कुटुंब उपाधि बहु व्याधि विषम अनुमानि ।
तृनसम तजि जपिहौं सुधासिन्धु नाम पन ठानि ।।३६

दशा देखि दृग दिल जगत जग-मग सरुग सुजानि ।
हालाहल-सम निदरि तेहि रमि रहिहौं रसखानि ।।३७

खान-पान-सनमान-तिय-तनय बिकार बिचारि ।
रटिहौं नाम निसंक मन अतन हिराय सुखारि ।।३८

बार-बार धिक धूल गुनि लोक-लाज खरखाज ।
नाम-सनेह सजाइहौं करि उज्वल मनुराज ।।३९
बिजन विपिनिवर वास सजि तजि तमत्रिगुनितसंग ।
रटिहौं नाम अकाम मन विपुल बढ़ाय उमंग ।।४०
नाम मनोहर मोदप्रद कलित कूक सुनि कान ।
ह्वैहैं कबहूँ मन वपुष विवस समान महान ।।४१
बाहर भीतर करन कुल नाम माझ करि लीन ।
अमनस ह्वै रहिहौं कबहुँ निदरि वासना झीन ।।४२
सिय-जीवन-अनुराग-घन नाम सनेहिन साथ ।
कबहुँ मोर मानस रमन करिहैं होय सनाथ ।।४३
नाम-मोहब्बत मीठ मोहि कबहुँ लागिहैं नित्त ।।
ज्यों लोभी कामी हृदै वाम दाम दृढ़ चित्त ।।४४
श्याम सजन सम समुझिहौं कब्रहूँ नाम अनूप ।
विश्ववासना बिलग करि रटि परिहौं रसकूप ।।४५
सिय-सनेह-भाजन सुघन नेह नाम अभिराम ।
कपट-कलंक-कनात विन जपिहौं जिय वसुयाम ।।४६
नाम अनूपम कलन मधि रहिहैं मम मन डूबि ।
महा मोद नित मानिहैं काहू भाँति न ऊबि ।।४७
नाम सिरोमनि सुजस सुनि गूनि गरीयत अर्थ ।
निशि-दिन नेह निबाहिहौं बदन बिहाय अनर्थ ।।४८

चिदचित बिच व्यापक बिमल वरनाधिप निज नाम।
कबहुँ देखि दृग विषम मति तजि पैहौं आराम ।।४९
महाराज मनि नाम श्रीसुख सवाद सदसद्म।
समुझि सुमिरिहौं जौकयुत जोहि युगल पदपद्म ।।५०
नाम–लगन अन्तर कबहुँ लगिहैं लोभ– समेत।
छन बिछुरत तन त्यागिहौं जिमि झख वारि वियेत ।।५१
नाम रटन रसना कबहूँ करिहौं होस हिराय।
जिमि मयंक मुख प्रानपति निरखति तिय वलिजाय ।।५२
हे अवधेश कुँवर कला–कलित निकर निज नाम।
दीजै निज जन जानि मोहि हरि हिसाब दुखदाम ।।५३
हे सियवर रसिकन सुखद हे जीवन प्रद नाम।
अति आरति सह रटन कब करि छैहौं छविश्याम ।।५४
सकृत नाम रसना सुजपि ह्वैहौं कबहुँ बिचेत।
रूप–माधुरी–मनन मन–मोहन गुनन–निकेत ।।५५
श्रीसरयू तर–तीर प्रिय पुलिन बीच चित लाय।
रटत नाम पुलकाइहौं नैनन नीर बहाय ।।५६
श्रीबिमलाधिप नाम मनि-माल पहिरि निज जीय।
रोमरोम छबि छाइहौं निरखत दृग सिय पीय ।।५७
नाम दाम अन्तर कबहुँ फिरिहैं सदा समोद।
श्रवन सुनत सरसाइहौं सुख सर सुभग सरोद ।।५८
नाम मनोरम माल छवि रवि शशि सहस समान।
बार–बार लखि हरखिहौं संविहाय तन भान ।।५९

अधिक अमानी होय कब जपिहौं जीवन-नाम ।
सम संतोष सजाय जिय रुचिशुचिसचित्र सुजाम । ६०
प्रणवादिक मंत्रन अमल अर्थ परत्त्व प्रताप ।
कबहुँ ध्याय दृढ़ नाम मधि लहिहौं प्रमुद कलाप ।।६१
अवतारी अवतार जे जाहिर जग जगदीश ।
ते सब नाम परेश परतन्त्र मानिहौं वीश ।।६२
मोद कदंब प्रदान प्रिय मान्य तऊ विन नाम ।
दृग भरि तिन्है न ताकिहौं सुमिरत नाम सुधाम ।।६३
नाम-प्रेम वरधन वरन बिना बैन दुख-दैन ।
समुझि सतत सरसाइहौं सुमिरत नाम सुखैन ।।६४
सुजन-सनेही-सुहृद शुचि शिष्य मानिहौं तौन ।
जासु जीह जप नामकी अपर बात ते मौन ।६५
सुलभ-सुधारस-सिन्धु श्रीनाम-मगन मन मोर ।
कब ह्वैहैं हरदम हरखि तजि ममता-जगजोर ।।६६
रे मन निशिदिन नाम मुद-धाम जपन उत्कंठ ।
करत रहो पुलकित वपुष निदरि आस-बैकुंठ ।।६७
कौन काम की मुक्ति सो जहँ न रटन सियराम ।
नाम-रागविन निदरिहौं सोउ दिन अति अभिराम ।।६८
अमित हान बिन नाम गुनधाम विशेष बिचार ।
चिदचिंतामनि नेह करु परिहर हेतु असार । ६९
श्रीसुख सौ पन नाम-मनि-उत्कण्ठा प्रिय पाठ ।
करत मोद मानस अवस नाम-नेह-रस माठ ।।७०

इति नामोत्कन्ठा समाप्त:

रूपोत्कण्ठा

।। दोहा ।।

सरस सोहावन सुदित मम कब ह्वैहैं करतार ।
लखिहौं नखशिख माधुरी-सिय प्रिय-अंग उदार ।।१।।
लखत-लखत ललचाय चख चित्त मनोहर जोरि ।
मगन होत उतरात तन दैहौं तृण-सम तोरि ।।२।।
युगल रूप – रस – लालची लट्टू होइहौं हेरि ।
कोटिन काम कट्टू कबहुँ समुझि रहौं मुख फेरि ।।३।।
सियपिय–वपुष–पियूष प्रिय रूप पेखि उत्साह ।
कब सजिहौं मत्सररहित चित–चढ़ाय चय–चाह ।।४।।
जो कोउ कहिहैं हरषि हिय रूप–कथा कमनीय ।
सुनिहौं मनमुद मगन ह्वै मानि सुगुरु रमनीय ।।५।।
सतसंपति दंपति–चरण चारु सरोज विचित्र ।
कबहू मम मानस सरस संकाशिहैं पवित्र ।।६।।
वर वासर छन क्षेम–निधि कदाकंज मृदु मंजु ।
मधुप-मराल रसाल-सम ह्वै बसिहै तजि रंजु ।।७।।
जगमग पगपंकज परम प्रेम–प्रवाह निहारि ।
ह्वै रहिहै चेरी सुमति सुरति सोहाग विचारि ।।८।।
ललित ललन लोने युगल पदपंकज प्रिय अंक ।
अति अनूप नवरंग से रँगिहौं विगत कलंक ।।९।।

परम प्रकाशित पृष्टपद दृग देखिहौं कदापि ।
लोक शोक शत वासना निदरि अमित तम टापि ।।१०

अरुन हरन-मन नख-प्रभा राकापति शत-तूल ।
मृदुल सचिक्कन चाहि कब ह्वै जैहौं भव-भूल ।।११

मम मन तम - पूरन सतत संकाशिहै निशंक ।
श्रीनखदुति अनुभव मिलित लगन डाकिनी डंक ।।१२

अङ्क अनूपम माँह मन कबहुँ उरझिहैं दैव ।
कैसेहु बहुरि न सुरझिहैं जिमि सन गाँठि अतैव ।।१३

नूपुर नेहनिकेत निज जीवन जेहरि जोहि ।
कबहु कषायन कतल करि मुद पैहै मन मोहि ।।१४

अमल ललित अँगुरीन-छवि मधुर आभरन-संग ।
कब जोहत युग जाइहै निमिष समान सरंग ।।१५

अमल कमल-कोमल-ललित सुपद-विभूषन-बीच ।
मम मन मनि ह्वै लागिहै सुनत-सुरव रससींच ।।१६

विसद आभरन मनिप्रभा-मध्य कबहुँ रस एक ।
उरझैहै मेरो सुमन संतत सजि दृढ़ टेक ।।१७

श्रीरसिकेश-मनोज-मद - दमन विभूषन - रंग ।
निरखि हरखि बलि जाइहौं छोड़ि देह-गुन-संग ।।१८

युगल किशोर-कलानिकर-आकर छवि-गुन-धाम ।
अति अनुपम दृग देखि दुति दुरवैहौं कुल-काम ।।१९

युगल चरन-अरविन्द मृदु मधुर मरन्द अमंद ।
मन-मिलिन्द कब चाखिहौं परिहरि वनविष-फंद ।।२०
एंडी गुल्फ अजूब श्री प्रनय – पुष्ट – रस – दैन ।
कबहु देखिहौं दृगन भरि करि कल नेह अमैन ।।२१
जानु जंघ जगमग महा मनहारी कल कान्ति ।
सरसस्वच्छशुचि निरखिहौं सजि सबविधि चित शांति।२२
कृस कामद कटि केलिमय रुचि रसराज सुधाम ।
किंकिन कलित उछाह-भरि लखिहौं कबहु अकाम ।।२३
नवल नेह – पूरन युगल निरखि नितंब सप्रेम ।
निज वपु प्रिय तित लीन ह्वै कब लहिहै छम क्षेम ।।२४
नील पीत कौशेय वरवसन लसन लखि नैन ।
ह्वै जैहौं कबहू मगन लगन लगाय सचैन ।।२५
कलित किनारी कोरकनि मानिक-मनिन-समेत ।
अनुरागिन हिय हरषप्रद अद्भुत छवि दुति केत ।।२६
पियप्यारी – पौशाक प्रिय परमा प्रभानिवास ।
पुलकि सजल दृग देखिहौं करि अनन्त अभिलास ।।२७
घन-दामिनि-निदरनि वसन रसन सोहाग-समेत ।
मम मन – नैन निहाल ह्वै कब हेरिहैं सहेत ।।२८
नाभि मनोहर निम्न सर सुभग अनूपम देखि ।
त्रिवली तरल-तरंग-युत लोचन सफल विशेषि ।।२९

भाव – उमंग बढ़ाय उर रस पसु वपुष सवाँरि ।
लखिहौं नाभि-सरोज-छवि निखिल अपनपौ वारि ।।३०

अंबक अचल सराग मुद – मंदिर उदर – समीप ।
लगि पगि पैहैं प्यार पद पावन दृग दिल – दीप ।।३१

चलदल परन समान कवि-कथन न तेहि थल सोह ।
युगल–ललन लोने सुधा – सागर–अंग–विमोह ।।३२

उर उज्वल लावन्यनिधि विस्तीरन रसरास ।
विशद विभूषनमय मधुर कब लखिहौं पगि प्यास ।।३३

मुक्तामाल - रसाल - वनमाल - दाम बहु भाँति ।
सोहत मन–मोहत–रसिक जोहत नित नव कांति ।।३४

मेरी मति मालान – मधि कब गुथि जैहैं हेरि ।
सुदिन सुछिन ह्वैहैं कबहु सब दिशि से मुख फेरि ।।३५

कलित कंचुकी चारु चख चितवत कुच कल संग ।
लोभित ह्वै रहिहैं सुदृग मन समेत रसि रंग ।।३६

श्रीसियस्वामिनिनेहनिधि – अंग – सुरंग – सुखैन ।
कबहु ध्याइहौं हरखि हिय पाय अचल चित-चैन ।।३७

कंबु कंठ कमनीय गुन रेखर शेष - निवास ।
ललित विभूषन वलित कव लखिहौं सहित हुलास ।।३८

कलित कौस्तुभमनि प्रभादार पोत दुतिदाम ।
निरखि नैन निधि पाइहैं बार–बार अभिराम ।।३९

सरसीरुह - सुन्दर - सुखद-कोमल-ललित-ललाम ।
कबहुं कंजकर रागमय तकि छकिहौं वसुयाम ।।४०
मृदु अँगुरिन-मुद्रिक मधुर मण्डित मनि-कल-कांति ।
नख नव नूर-समेत कब लखि रहिहौं सजि शांति ।।४१
अमल आरसी सरस दुति दृगन देखि विन मोल ।
कब बिकिहौं वलि कांतिमधि लीन होय अति लोल ।।४२
रंजित मृदु मेहदी मधुर सज शुभसदन सुकंज ।
कबहूँ तेहि रँग माझ मति मिलि रहिहैं गत-रंज ।।४३
पहुँची प्रियपानिय परम कनक कटक कमनीय ।
कंकन-कला-कबूल-तकि छकिहौं रसि रमनीय ।।४४
भक्त-भाव-वरधन सुभुज जानु-प्रयंत विराज ।
मन-मोहन भूषन नवल ललित छनहि-छन छाज ।।४५
अङ्गद बाजूबंद बर बाफत बीज विचित्र ।
धनुष-बाण-संयुत सुभुज लखि कब प्राण पवित्र ।।४६
श्रीभुज-अवलंबन विना अभय न मन-मति होत ।
सो कबहूँ करि शरन सुख सरसे सहज निशोत ।।४७
चिबुक चारु चित-चखन-चल-चोरन विंदु-समेत ।
निरखि हरखि बरखाइहौं सुमन-सुरंग-सहेत ।।४८
नीलपीत वरविंदु-बिच चित चल-अचल कराय ।
सकल स्वाद-रस पाइहौं सोउ दिन विधि उघराय ।।४९

युगल किशोर-कपोल कल-अमल-मुकुर-दुति-दैन ।
अति अनूप आभा वलित पेखि पाइहौं चैन ।।५०
अधर मधुर मनमोहने असल राग-रसरूप ।
कबहुँ भाव - भरि हेरिहौं हरन-हीय - दृग-धूप ।।५१
अति अनुपम रंजित रुचिर दशनावली विलोकि ।
कंज-कोश-मधि-दाम दुति तउ न तुलत छवि लोकि ।५२
द्विजप्रति मति मेरी अटकि रहिहैं सरस सचेत ।
कदा कलित तिथि आइहैं थकि बसिहैं मनप्रैत । ५३
रसना रागमयी बिपुल विद्या - विभव - निवासि ।
निरखि वचन-पीयूष प्रिय सुनि पैहौं सुखराशि ।।५४
वीन-झीन-सुरघन-कलित-कोकिल-कूक कठोर ।
युगलकिशोर-गिरा मधुर चमन चारु चितचोर ।।५५
जौं लौं बाग--विहार-रस बाग-सैर नहिं कीन ।
रे मन तौ लौं अमित मत कथन सुनन विष-भीन ।।५६
श्रुति सोहन मोहन - मनहि दोहन - रहस उदार ।
सकल फलन फलप्रद परम वचन-रचन छविदार ।।५७
मंदस्मित संयुत वचन सुनि पाहन पिघलात ।
अहोभाग सुनिहौं कबहुँ बिसरि लोक-श्रुतिवात ।।५८
अमित कलप परिताप-तम विषम भावना हीय ।
सुनत सुधेश वचन सरस शीतल दुति रमनीय ।।५९

नवल नेहनिधि नासिका मुक्ता-सुनथ-समेत।
झुकनि-ललित-डोलनि अधर-परसनि-हिय हरिलेत।।६०

ललित लाड़ली लालवर बेसर विशद बुलाक।
पगनि परसपर पेखिहौं करि चित्त चपल हलाक।।६१

उरझनि नवल अनूप नथ-मुक्ता मधुर सुरंग।
दृग देखत ललचाइहौं पल प्रति सजत उमंग।।६२

नैन मैन - मद - मथन मुद-अैन दैन-दुति-दोह।
कबहुँ हेरिहैं तरफ मम सहित सुधा-सम छोह।।६३

अंजन-अंजित श्याम-सित-अरुन रंग रमनीय।
सुख-समूह-बितरन कुशल लखि ह्वैहौं कमनीय।।६४

चित्त चोरावनि चारु चल चितवनि अविचल-बीज।
कब बिलोकिहैं ओर मम सबही भाँति पसीज।।६५

रे मन अमन आमन ह्वै निरखु नैन सुख-खान।
सुख-समाधि पैहै अवस हिरस-हिराय-हरान।।६६

मुख-मयंक-कल-कौमुदी-प्रभा सुशीतल हीय।
कबहुँ फैलिहैं फबित गुन गुनि अंतर रमनीय।।६७

बदन बिचित्र वनज सतत संविकास रस-धाम।
लखि मन-मधुप मोहाइहै ह्वै तन्मय बसु-याम।।६८

अति अनूप विधु-वदन-बिच चित चखचारुचकोर।
एकटक ह्वै कब लागिहैं निशिदिन नेह हिलोर।।६९

स्वच्छ सुधा सर सुभग मुख मम मानस दृगमीन ।
मगन निरंतर रहै कब सजि सनेह पन पीन ।।७०

सुठि सुपलक प्रिय पक्ष भ्रू बंक कमान समान ।
वरुनी वान निशान नव नैन निरखि मस्तान । ७१

सुखमा भवन श्रवन कलित कुण्डल ललित समेत ।
रमक झमक झूलन निरखि ह्वैहौं कबहुँ अचेत । ७२

झाँई कलित कपोल मिलि महामोद मन देत ।
युगलानन्यशरन हृदै हारी सब सुधि लेत ।।७३

भाल विशाल रसाल दिल देत कमाल जमाल ।
तिलक चिलक चितवत सुमन करन हरन हिय साल ।।७४

बंदी बेना विंदुवर शीश सुमन सुखखान ।
कबहूँ दृग भरि जोहिहौं जटित मनीन महान ।।७५

झमकदार झुमका ललन लोयन करन निहाल ।
तकि छवि छकि बकिहौं न कुछ रोमरोम खुसहाल ।।७६

कुंचित मेचक केश शुचि सुरभित रसपनिवास ।
उर उमगाय निहारिहौं कौन सुदिन सुखरास ।।७७

केश कलित सीमंत कल कबरी कलानिधान ।
ग्रथित मधुर मुक्तेश मणि प्रीतम प्रीति निदान ।।७८

श्रीस्वामिनी सुकेश वर विसद दमक शितलेश ।
हेरि हिरा जैहौं तहाँ सजि सिंगार – आवेश ।।७९

जुलुफ जंजीरन बीच चित चंचल उरझि विशेष ।
कबहुँ अहो विधि एकरस फँसि रहिहैं अनिमेष ।।८०
चारु चन्द्रिका चमक कल क्रीट सरस सिरताज ।
कबहु हेरिहौं लीन ह्वै शमला सब्ज सुराज ।।८१
सारी दुति–वारी सुरभि–सानी शीश निहारि ।
बार–बार तन–मन–करन निकर दीजिहौं वारि । ८२
श्री प्यारी – सारी – सुधा बोरी चमकन माँझ ।
मन–मति–गति तित राखिहौं जिमि सनेह सुत बाँझ ।८३
श्रीसियस्वामिनि–साटिका किधौं बाटिका–प्रीति ।
फूली सुमन मनीश फल लोयन लाह सुरीति ।।८४
घन दामिनि चंपक तरुन तरु तमाल मनिमाल ।
युगल सुछवि तकि वारिहौं सब उपमान जमाल ।।८५
युगलकिशोर चतुर चरन गति अति रति दृग दैन ।
निरखि हरखि उपमा निखिल हँसि पैहौं चख चैन ।८६
प्रीतम प्रानप्रिया पगे प्रेम परस्पर पेखि ।
धन्य अपनपौ मानिहौं तृन सम त्रिभुवन देखि ।।८७
अङ्ग अङ्ग पर वारिये अमित अनंग गुमान ।
पल प्रति छवि शतगुन नवल लखि लहिहौं सुखखान ।।८८

तिन सम बढ़भागी न कोउ कोटिन लोक मँझार।
जिन उर उत्कण्ठा युगल रूप परम सुखसार।।८९
सो सुभागमान न सभा माँझ सरस सिरताज।
जौ न सुजन जिय रूपरस उत्कंठा थिर राज।।९०
वंदनीय पद वन्दिये इष्ट समान सुधारि।
तिनकी कृपा कटाक्ष से सिय पिय रति अविकारि।।९१
यथा लगत आसक सुमन शुचि मासूक समीप।
तथा रूप उत्कंठ उर धारत नित दिल दीप।।९२
सिय जवन परिकर सहित कबहुँ हेरिहौं नैन।
रोम रोम पुलकाइहौं सुनत मधुर वरवैन।।९३
सुभग रूप उत्कंठ कल कीरति वरनत वैन।
सियपिय कृपा कटाक्ष से झलक रहे उरऐन।।९४

इति श्रीउज्ज्वलोत्कण्ठायां श्रीयुगलानन्यशरणविरचितायां
श्रीसीतारामाभिराम-रूपोत्कण्ठा द्वितीया समाप्ता

गुणोत्कण्ठा

॥ दोहा ॥

श्रीसियवर-गुनगन विशद रसद रमन-मन-प्रान ।
मगन महोदधि मोद ह्वै कब सुनिहौ धरि ध्यान ॥१
मृग-मयूर-सम सुजस सुनि गुनि धुनि पुनि पुनि शीश।
चकित होय कब नाचिहौं निदरि वपुष तमतीस ॥२
कबहुँ गाइहौं गुरु गिरा गम्य गरीय गुनानि ।
द्वंद मंद अपहाय हिय प्रीति-प्रनय पहिचानि ॥३
पुलकित वपु गदगद गिरा नैनन नीर बहाय ।
गुन सुनि रसना गाइहौं लोक-लाज जलवाय ॥४
करुना-कृपा-कदम्बिनी कब बरसिहै विचित्र ।
मम मानस-महि-मध्य नित तोषकरन सुपवित्र ॥५
वात्सल्य सौशिल्य शुचि सुख सौपन गुन दिव्य ।
मनन निरंतर कबहूँ करि परिहरिहौं भवसव्य ॥६
अगुन सगुन-वर-बोधघन बीज सुगुन द्युतिवंत ।
श्रवन सुनत सरसाइहौ जिमि तिय आगम-कंत ॥७
सिय-वल्लभ-शुभ-सुलभ-गुनमाझ पोहिहौं चित्त ।
महामोद-मन मानिहौं यथा रंक वरबित्त ॥८
श्रीसीता --सुखप्रद - सुगुन सुधासहसमधुरेश ।
रसि-रसि रस हरषाइहौं निदरि नेह-भव-वेस ॥९

दुतिनिधान दिलवर–दया अति अभयी जिय जानि ।
जगत-जलूस जलाइहौं प्रिय प्रतिकूल पछानि ।।१०
जिमि मलीन मनमोद–युत सुनत अपर उपहास ।
रोमरोम तिमि पुलकि नित सुनिहौं गुन-सुखरास ।।११
कोटि कलाकर–रवि–सरिस शीतल–तेज-निधान ।
श्रीविमलाधिप-गुन-श्रवन सुनिहौं होय अमान ।।१२
श्रीकोशलपति सदसुजस श्रीगुर – संतन -- संग ।
सुनि गुनि नेह-निवाहिहौं निदरि मनादिक जंग ।।१३
हे विधि विरद विचारि चित वचन वदिय मम प्रीति ।
कबहु नवलगुन अमल मधिलगिहै सहित प्रतीति ।।१४
सुन्दरता – माधुर्य्यता – सुकुमारता – सुवेष ।
महामोदनिधि गुननमधि ह्वैहौं मगन निमेष ।।१५
श्री सीतापति गुन गनन गुनि जैहौं गिर बीच ।
युगलानन्य विहाय बहु वाद विषम मग मीच ।।१६
मोद–विनोद–निकेत श्रीसीतावर - गुन - गाथ ।
श्रीगुरु – संतन से कबहु सुनिहौं होय सनाथ ।।१७
जग - जीवन - पीयूषपर प्रीनन प्रान प्रचार ।
श्रीसाकेतपरेशगुन गैहौं बलित विचार ।।१८
श्रीसीतावर – गुन – अगुन–अनुभव वितरनहार ।
कबहूँ मन निर्मल सहित चितवैहौं पगि प्यार ।।१९

कबहूँ कीरति - कांति-मधि ह्वैहैं मम मन लीन।
पलभरहू न बिछोहिहैं ज्यों सुन्दर सर मीन ॥२०
लाभालाभ – विलास बहु विषम वासना - वारि।
गइहौं उर उमगाय गुन करन कलेवर वारि ॥२१
जिमि देशादिक कलिकथन रुचत हृदै हरषाय।
तिमि तम-तरनि नवीन गुन सुनिहौं वन वरषाय ॥२२
प्रतमी निद्रादिक निदरि निरथ नेह नर जानि।
कबहुँ कृपा-कमनीय-बल गुनिहौं गुन सुखखानि ॥२३
यथा ज्वरादिक जरनयुत जन न रुचत मधु चीज।
तथा विभव बहु अरुचि चित ह्वैहै विन-गुन-बीज ॥२४
परानन्दरसधामगुन-स्वादी रसिकन साथ।
कबहु हुलसि मन उरझिहैं छोड़ि छाह गदगाथ ॥२५
श्रीसिय-स्वामिनि-संग सुख-सुखमा-सागर श्याम।
दिव्य-भव्य-नितनव्य गुन गैहौं तजि धन-धाम ॥२६
ऐसो वरवासर कबहुँ ह्वैहै श्रीसिय-राम।
लगिहै हालाहल-सदृश चरचा – जग दुख-ग्राम ॥२७
सिय-सुखमा-सर-हंस-गुन जौलौं मनन होत।
तौलौं खेद – कदंव कटु सहत शीश अनघोत ॥२८
श्रीसद्गुरु सुठि-सुजस शुभ सत-सिद्धान्त हमेश।
श्रीसियवल्लभ-गुन श्रवन सो सुनि हो सुख बेश ॥२९

श्रीहरिहर विधि प्रमुख सुर मुनिन सुप्रानअधार ।
श्रीसियजीवन-गुन हृदै गुनिहौं समुद अपार ।।३०

जब-जब कटु कर्मन विवश वपु धारौं भव-माँह ।
तब-तब हे सियराम मोहि देहु सुगुन-तरु-छाँह ।३१

अति अपार औगुनन को सदन हमारो हीध ।
श्रीसिय-पिय गुरु-कृपा से सोउ ह्वैहैं रमनीय ।।३२

श्रीगुन - उत्कण्ठा करत भरत हृदै उत्साह ।
सियवल्लभ तेहि बस सतत होय हरन दिल-दाह ।।३३

श्रीगुनगन-सीचन-विना हरित होत नहि हीय ।
ताते गुन-गन गाइहौं निदरि आसरो बीय ।।३४

इति श्रीउज्ज्वलोत्कण्ठायां श्रीयुगलानन्यशरणविरचितायां श्रीगुणोत्कण्ठायां तृतीया समाप्तः

धामोत्कण्ठा

॥ दोहा ॥

श्रीसियराम सनेहनिधि अवधधाम अभिराम ।
निखिल निकाई नाहप्रद सेवत सब सुखसाम ।।१

मन-बच-बपु श्रीधाम मधि कब बसिहौं सुख-संग ।
देखत दृग द्युति दिव्य महि मोदमयी रँग-रंग ।।२

श्रीविमला-वैभव विमल बरनत बदन सप्रेम।
अचल निवास सजाइहौं संतत सजि निज नेम ॥३
श्रीसाकेत सुधासदन मनिमय महल निहारि।
निशि-दिन निमिष-समान कब बितवैहौं दुखदारि ॥४
श्रीसीतावर रसरसिक तरु तृण गुल्म लतान।
निरखि नेहयुत नाचिहौं संविहाय भव-भान ॥५
श्रीसत्या भूरुह विशद रसद रंग रमनीय।
सफल सुमन पल्लव निरखि बिसरैहौं तम-तीय ॥६
श्रीशोभा-सर-धाम-मधि मगन होय दिन-रैन।
विविध बासना निदरिहौं सुमिरत सदन सुखैन ॥७
खान-पान-सनमान सब हान जानि अनुमानि।
श्रीकोशला समीप विन निखिल लाह दुख-खानि ॥८
श्रीसरयू-जल-पान करि रहिहौं हरष-समेत।
असन रसन चित्त-चाह नहि करिहौं कबहुँ जनेत ॥९
श्रीसरयू - पावन - पुलिन प्रेम - प्रमोद - निधान।
श्रीप्रमोदवन-द्रुम मधुर लखि तजिहौं तम - तान ॥१०
श्रीअशोकबाटिका तरु तरे तृषा तनु त्यागि।
पुलकित बपु वसिहौं कबहुँ युगल-रूप-रस-रागि ॥११
ललित लाड़िली-लाल छवि छटा जहाँ तहँ हेरि।
दशा दिवानी धारिहौं दोउ दिश से मुख फेरि ॥१२

लोकलाज कुलकाज को समुझि सुमन विषरूप।
बसिहौं बिमला विमल बुधिबलित लखत युग रूप ।।१३
कबहूँ कनक निकेत रति हेतु माँझ ललचाय।
सरस सजातिन संग सुठि सजिहौं चित परचाय ।।१४
सुभग दिवस ह्वैहैं कबहुँ धाम निवासिन संग।
कोटि कुटुम्बनि से सरस बढ़वैहौं रुचि रंग ।।१५
जो कोउ धाम निवास हित हरषि बोलिहैं बैन।
तेहि अनुमोदन विविधि करि चलचित पैहौं चैन ।।१६
धाम सनेहिन साथ मम कब बढ़िहैं अनुराग।
अधिक अमानी होय हिय सुनिहौं सरस सुबाग ।।१७
अपर कुदेशन में भ्रमत श्रमत सुधाम बिहाय।
तिन सन नेह निवारिहौं समुझि विवर धन हाय ।।१८
युगल उपासिक स्वच्छ निज नाम धराय जहान।
बसे न धाम विनोद बन तेहि सम कौन अजान ।।१९
बिसद बिरति बानिक बलित बहुरि गमन विविदेश।
युगलानन्यशरण तिन्है तजिये तृन सम मेश ।।२०
श्रीसत्या सरयू सुधा पीबत मन मुद मानि।
तिन रसिकन पद-कंज रज कब पूजिहौ अमानि ।।२१
अमित कलंक उपाधि दुख दारुन सहि सुख साथ।
बसिहौं श्रीसरयू सुतट सुमिरत सिय रघुनाथ ।।२२

श्रीसीतारामास्पद संयुत सुखद सुधाम।
अवध अवधिभरि भजन युततजि तिलोक तम खाम ।।२३
सेवत धाम मुराद मन पूरन रंग अनंत।
चढ़े चित्त बहु बित्त छवि छन-छन श्रीसिय-कंत ।।२४
धाम दरस देखत दृगन चलिहै कबहुँ प्रवाह।
आपा-पर बिसराय सुधि अचल चित्त चख चाह ।।२५
श्रीसुखमानिधि-धाम मधि कब बसिहौं पन-ठानि।
शीश छेदहू भये पर प्रीति-प्रतीति न हानि ।।२६
बिधि-हरि-हर-पुर-चाह चित सपनेहू बिसराय।
बसिहौं लोक कदम्ब तजि अवधि बीच हुलसाय ।।२७
अहोभाग अनुराग मम मानुष-बपु प्रिय पाय।
अचल बास-सरयू-सुतट विषम बिकार बिहाय ।।२८
मान-प्रतिष्ठा घूरि-सम ऋधि-सिधि धूर-समान।
अनत बड़ाई बिष निरखि बसिहौं धाम प्रधान ।।२९
अवध-परागन पर अमित लोक लोकपति-भूति।
वारि दीजिहौं शंक-बिन सोउ पल प्रीति प्रसूति ।।३०
श्रीसीता-वल्लभ-सुगुन गावत सुनत समोद।
करिहौं विमला भूमि बिच अटन वजाय सरोद ।।३१
राग-द्वेष-दुर्मति-दगा दूरि किये श्रीधाम।
सतत सेइहौं हरख हिय पाय परम विश्राम ।।३२

षट् ऋतु रहस उछाह दृग देखत कल्प करोर ।
बितवैहौं पल पाव सम सुमिरत युगलकिशोर ।।३३

तजिहौं नहिं श्रीधामपद होनी होय सो होय ।
परम पतिव्रतधर्म धरि बसिहौं विधु-मुख-जोय ।।३४

धाम-नेह निर्मल - निजानन्द - सुपद - दातार ।
युगलानन्यशरण सुमन समुझत प्रमुद अपार ।।३५

बार-बार बहु बिनययुत याचत सिय-पिय पास ।
दीजै धाम सुवास मोहि हरि हिसाब भव भास ।।३६

अमल धाम उत्कण्ठ वर बाँचत सुनत सुमोद ।
पैहैं बिमलावास सुचि सुजन बैठि पिय गोद ।।३७

इति श्रीधामोत्कण्ठा चतुर्थी सामाप्तः

लीलोत्कण्ठा

।। दोहा ।।

श्रीसीतावर बसु पहर लीला रितु रस रीति ।
उत्कण्ठा उर रैन दिन कब ह्वैहै पगि प्रीति ।।१

मनिमय महल चहल पहल माँझ मनोहर रङ्ग ।
प्रिय परिकर सह प्रानप्रिय लखिहौं कबहुँ उतङ्ग ।।२

श्रीसुखमा सुखसिन्धु श्रीकनकसदन निज धाम ।
रचना अमित निहारिहौं समैं समै अभिराम ।।३

यूथेश्वरिन महल मनिन मण्डित नैन निहारि ।
श्रीगुरु आचारज भवन लखि ह्वैहौं बलिहारि ।।४

सप्ताबरन सुरंग मनि नाना जड़ित बिलोकि ।
अति अनूप आलिन महल तकि छकिहौं दृग रोकि ।।५

बिसद बाग सत सौज सज सदन विलच्छन पेखि ।
मगन होय हरखाइहौं धन्य अपनपौ लेखि ।।६

अष्ट कुँज कमनीय चहुँ ओर चारु चित चोर ।
निरखि निछावरि होइहैं तन मन रँग रस बोर ।।७

अमित रंग रंजित बिहँग नाना जाति बिचित्र ।
कबहुँ हेरिहौं हरित हिय दशा धारि समचित्र ।।८

ललना ललित सवाँरि तन अतन निबारि सचेत ।
कबहुँ युगल छवि हेरिहौं बसि श्रीकनकनिकेत ।।९

बपुष तीन अध्यास कब त्यागि समुझि शतशाल ।
रमिहौं निज अनुपम सु तन श्रीगुरुपद सजि भाल ।।१०

ऊपर कायिक कृत निकर अंतर राग रसाल ।
युगलानन्यशरण कबहुँ ह्वैहै अद्भुत ख्याल ।।११

सुमन सेज मुद मोद सदसदन सैन रस रूप ।
लोचन लगन लगाय कब तकि छकिहौं गत धूप ।।१२

चहूँ ओर झम झम झनक नूपुर किंकिन बीन।
सुभग सहचरिन मधुर धुनि कब सुनिहौं रति लीन ॥१३
रंगमहल मधि मोदनिधि ललित लाड़िली लाल।
पगे परस्पर प्यार कब लखिहौं होय निहाल ॥१४
युगल सुजीवन जान मम गम तम समन सुशील।
सदन सैंन जागे सरस रागे रँगन रंगील ॥१५
कबहुँ हेरिहौं नैन निज अति अलसाने अंग।
प्रियाप्रेम परतंत्र पिय सिय समेत रसि रंग ॥१६
उन्मद दृग राते रहस अरस निबारन नैन।
निरखि हरषि बलि जाइहौं सुनि सरसाने बैन ॥१७
प्रेम प्रमोद महा मदन मद माते दोउ प्रात।
झुकनि परस्पर प्यार पगि जोहि मोहिहौं गात ॥१८
आलस रस बस बरबचन सुमन सचन सुखसार।
उर उमंग उमगाय कब सुनि ह्वैहौं बलिहारि ॥१९
सिथिल बसन भूषन लसन युगल ललन विपरीत।
कौन सुदिन अनुपम निरखि पैहौं प्रीति प्रतीति ॥२०
निज यूथेश्वरि संग मिलि सेवत सुख रमनीय।
सखिन सहित गुन-गान कब करिहौं कृत कमनीय ॥२१
रंग रंगीली रागिनी प्रात गाय हुलसाय।
कबहुँ ललन रिझवाइहौं रसना रहस रसाय ॥२२

सौज सरस सहचरिन कर कंज युगल अनुकूल ।
निरखि हरषि ललचाइहौं लोचन लाह अमूल ॥२३
श्रीयूथेश्वरि साथ युगजीवन रूप अनूप ।
पट उघारि लखिहौं कबहुँ परि उछाह-रस-कूप ॥२४
चौकी चिन्तामणि चमकदार सेज प्रिय पास ।
पधरैहौं जीवन जसी करत गान रस रास ॥२५
मंगल बस्तु बिचित्र दृग सरस समीप दिखाय ।
पुनि बिधु बदन बिलोकिहौं सोउ शुभसमय सोहाय ॥२६
रसावेश उरझनि उरसि उज्वल लगन लगाय ।
विकल वपुष मंगल असन करवैहौं उमगाय ॥२७
अमल अलौकिक प्रेमयुत असन समै रस सान ।
यकटक कबहुँ बिलोकिहौं होय महा मस्तान ॥२८
पिय प्यारी प्रिय प्रात कृत कलित सरस सुखदैन ।
कबहू सरुचि जिवाइहौं पल प्रति पावत चैन ॥२९
भूषन बसन सवारिहौं दृग देखत दुति रूप ।
धन्य धन्यतम मानि मन रसि रहिहौं रसभूप ॥३०
मंगल कुंज-बिहार बहु सखिन समाज समेत ।
गान तान कौतुक कला पियप्यारी हिय हेत ॥३१
दंत सुधावन कुंज मधि रदन सुदुति दमकाय ।
आलिन मन मोदित करत कब तकिहौं हरखाय ॥३२

गौर श्याम अभिराम मृदु मूरति मोदनिधान ।
सखिन समूह सुमध्य में लखि छकिहौं पगि प्रान ।।३३

श्रीपियप्यारी प्रमुद मन सखिन समेत सुरंग ।
मज्जन कुंज मराल गति निदरन गमन उमंग ।।३४

कबहुँ चारु चख चाहि चित ह्वैहैं विचल विशेष ।
लोक वेद वागन त्रिरसि पाय प्रीति बर वेष ।।३५

अति अनूप मज्जन सरस साल रसाल सोहाय ।
जेहि छवि तकि कबिगन चकित बरबस सुमन मोहाय ।।३६

मज्जन साल रसाल सर चहूँ हरित द्रुम बेलि ।
युगलकिशोर विलोकिहौं तेहि थल सजत सुकेलि ।।३७

लली लाल मुदमाल प्रिय परिकर सहित नहान ।
केलि कदँब कौतुक कलित कब लखिहौं सुखखान ।।३८

नवल नेहमँ कुण्ड कल कौतुक मन बच पार ।
अहो सुदिन दृग देखिहौं होय बिपुल बलिहार ।।३९

स्वच्छ सुहावन बसन भल भूषन समय सुयोग ।
पहिरैहौं दोउ ललन तन मानि सफल दृग भोग ।।४०

सुभग सवारी सजि युगल ललन समुद पधराय ।
लखिहौं लोचन लाय छवि बिरह ब्यथा बिसराय ।।४१

श्रीसहचरी समाज युत शुचि शृङ्गार निकुंज ।
कबहुँ जात दृग जोहिहौं करि चचंल चित लुंज ।।४२

श्रीरसराज मधुर सदन माँझ मनोहर जोरि ।
सजि श्रृङ्गार बिलोकिहौं सब सन नाता तोरि ।।४३
रंगरंग भूषन बसन नख–शिख रचि रुचि सँग ।
मुकुर देय कर कंज मधि निरखैहौं सोमंग ।।४४
श्रीनृपनन्दननंदिनी नेह निकेत निहारि ।
प्रिय परिकर पेखत परम बहिहैं बन दृग धारि ।।४५
कबहुँ प्रेम भरि मानसर कसर कल्पना हीन ।
निरखि नैन मूरति मधुर ह्वैहैं मन मधु मीन ।।४६
कलित कलेवा कुंज मधि असन अनन्त विधान ।
पावत शुचि रुचि सखिन मिलि लखिहौं बिन व्यवधान ।।४७
थाल प्रसाद सुखद सुधा समुद स्वाद सह पाय ।
कब प्रमोद वारिधि विषै मगन होइहौं जाय ।।४८
श्रीकर मुख विधु आचमन सरस सनेह कराय ।
नव निचोल परसाय पुनि सुरभि सुबपु परसाय ।।४९
बीरी विशद बनाय विधु बदन देय हरषाय ।
दृग भरि छवि फबि हेरिहौं मंद हँसनि ललचाय ।।५०
सिय परिकर प्रीतम परम प्रीति पेखि सब भाँति ।
कलित केलिमय बस्तुबर धरिहौं तकि नव कांति ।।५१
शुभ सतरंज गँजीफ चित चोरन चौपर चारु ।
अपर खेल मुद मेल सखि धरि समीप छवि सारु ।।५२

मृदुल मनोहर कंज कर गहि प्रिय पासन स्वच्छ ।
कब ढारत अति अदा सजि दृग देखिहौं प्रतच्छ ॥५३

श्रीप्यारी दिशि बैठि कब चलिहौं सारि सप्रीति ।
होय मोदनिधि मन मगन समुझि सनेहिन रीति ॥५४

हाव – भाव अनुभाव रस सरस परस्पर पेखि ।
ह्वै जैहौं बलिहारि निज भाग अनूपम देखि ॥५५

हारि ह्वै हारी बिशद रस बरसत तन श्याम ।
उर उछाह चख चौगुने कब तकिहौं अभिराम ।५६

युगल ललन मृदु मिलन मद मनसिज जगन अजूब ।
लगन लाय लोचन कबहु ँ तकि छकिहौं हिय खूब ॥५७

चंपक चप चपला पुरट घन मनि तरुन तमाल ।
कबहु ँ बारिहौं हेरि दोउ सुन्दर रूप रसाल ॥५८

मो तन तकि कहिहैं कबहुँ अरी आज रसराज ।
रहस सोहावन श्रवण कर यूथेश्वरिन समाज ॥५९

मम माथे हरखित ह्वै प्रिया प्रानप्रिय संग ।
कबहुँ मंजु मोहन सुकर धरि हरिहौं बदरंग ॥६०

श्रीपूजित पद–पंक रुह कौन सुदिन बरबैन ।
कहिहैं मोहि निज किंकरी अति अद्‌भुत प्रद चैन ॥६१

जानि आपनी किंकरी त्रिविध भाँति निज हीय ।
महल टहल करवाइहैं श्रीसिय छबि रमनीय ॥६२

अहो सुदिन शिर मोर कब युगल दिये गलबाँह ।
मंद मधुर मुसुकाय मुख कब लखिहौं चितचाह ।।६३
जगमग भूषन बसन बर गौर श्यामअँग-संग ।
अति अनूप दृग देखिहौं सजि उत्साह उमंग ।।६४
पल-पल पर रचिहौं कदा केलि कदंब सचाह ।
जिमि निधनी धन कामिनी प्रीतम मिलन उछाह ।।६५
राजभोग शुभसमय लखि सखि सियश्याम रिझाय ।
मृदु मुसुकान निहारि पुनि कही सयुक्ति जनाय ।।६६
सुनि सखि-बैन सुखैन दोउ राजिव-नैन उदार ।
चले मत्तगज गमन युग जीवन-प्राण-अधार । ६७
असन साल पथ अमित विधि चरित-उछाह अनूप ।
कब लखि हिय हरखायहौं छकि उज्वलरस भूप ।।६८
हौं हेरिहौं समाज-सुख असन साल मुद-माल ।
पिय-प्यारी-जेवन मधुर परिकर-सहित रसाल ।।६९
महामोद-मंदरि सुछिन ऐहैं अहो उदार ।
जब जोइहौं उमंग-भरि भाविक सुमन अधार ।।७०
करहि केलि कमनीय श्रीसुखमा-सदन अजूब ।
बलिहारी परिकर करहि भरहि उछाय सुखूब ।।७१
असन - रसन - उत्सव-अमल-कमल-खिलावनहार ।
अहो हेरि हरषित हृदे तजिहौं वपुव्यवहार ।।७२

उत्कंठा–किंकरिन लखि लालन ललित सुभाव।
निज विधु–वदन पुनीत प्रिय शेष दीन्ह चितचाव ।।७३
कहा कहों विधि सुदिन उहजब जन जानि बुलाय।
दै प्रसाद अह्लाद–घन रहिहैं मृदु मुसुकाय ।।७४
भोजन करि अचवाय मुख बसन परसि लहि बीर।
सिंहासन–आसीन छबि लखिहौं दोउ रसधीर ।।७५
मनिमय महल सुजगमगित सुचि सुरभित सब भाँति।
सहज सौज-संयुत सदा तहँ सजि सेज सुकाँति ।।७६
ललित लड़ैती लाल तहँ प्रीति–सहित पधराय।
लखिहौं मधुर मयंक–मुख मुख-सुखमा दृग-लाय ।।७७
सैन सुभग सजिहैं युगल हौं पलोटिहौं पाँय।
बार–बार निज भाग को अभिनन्दन करवाय ।।७८
चरन–चारु नख–कांति प्रिय अंक अमल उर-लाय।
सावधान सुख सेइहौं गुन अनूप धिय ध्याय ।।७९
राग–रंग–नृत्यादि निज नेहिन नेह–प्रसंग।
सुनिहौं श्रवन उछाह–सह विगत-विकार-कुरंग ।।८०
जामाधिक अवशेष सुचि समय सनेहिन हेत।
युगल ललन जागे परम पागे प्रेम समेत ।।८१
विमल सलिल सुरभित सुमुख धोय निचोल सवाँरि।
मेवा मधुर पवाय कब लखिहौं छवि उर–वारि ।।८२

अचमन कलित कराय कब बीरी दै मुखकंज ।
मुकुर मनोहर सुकर लै दरसैहौं छवि-मंज ।८३
प्रीतमप्रिया प्रवीन प्रिय वदन परस्पर हेरि ।
अदा अजूब सराहि कब लखिहैं मोहि मुख फेरि ॥८४
सभासदन मधि नेहनिधि सकल सनेहिन मोद ।
देत यथारुचि कब लखब निज थल वलित विनोद ॥८५
सबहि तोषि सुन्दर सुखद सियप्यारी पुनि पास ।
ह्वै विपुल उमगाय मुद पीबत सुधा सुप्यास ॥८६
विशद-विनोद-विहार-हित उपवन सखिन समेत ।
सुमन सुफल निरखत कबहुँ लखिहौं मोद-निकेत ॥८७
हास-हुलास-उमंग उर गौर-श्याम अभिराम ।
हरित पीत तरु लतन तर कब लखिहौं छवि-धाम । ८८
सरस सिकार-बिहार-रस राज-रंग-अनुकूल ।
अंग-अंग आलिन विंध्यो तकि ह्वैहैं भव-भूल ॥८९
रोम-रोम पुलकाइहौं ललित विनोद विलोकि ।
मधुर वचन-पीयूष प्रिय सुनिहौं चित-वृति रोकि ॥९०
सुभग सुमनमालाभरन नख-शिख प्रिय पहिराय ।
अंबक अमल अनूप फल कब लहिहौं नियराय ॥९१
साँझ समै श्रीसदन-मधि सुखमानिधि युग रूप ।
कबहुँ हेरिहौं हरन-हिय सजि जिय जौक अनूप ॥९२

गान–तान–सुखखान दुतिदार आरती मोद ।
भोग–राग–उत्साह लखि ह्वैहै विपुल विनोद ।।९३

रासकुंज कमनीय शुभ सोम श्रवन वट–तीर ।
रत्नाचल सरयू–पुलिन निकट रसन गंभीर ।।९४

महा–मोद–मंदिर–रहस अकथ – अनूप – अजूब ।
शरद शशी शत-सहस सम सतत प्रकाश सुखूब ।।९५

फरस–फनूस–जलूस सब मनिमय दीप–प्रदीप ।
ललित लता दश दिशि लसी नहि अति दूर-समीप ।।९६

नवल निकुंजन की कहाँ परमा कहौं निहारि ।
लागत लघु बैकुण्ठ–वर-विपिन-विभव बलिहारि ।।९७

सुमन पंचरँग फल ललित पल्लव मृदु सब काल ।
बड़भागी रागी लखहिं भूरुह रूप रसाल ।।९८

युगलानन्य अली कबहुँ उन तरु तरन समाज ।
हेरि हिये हरखित मधुर सुचि सजिहैं रसराज ।।९९

देव-लोक–कन्या कलित नाग–कुमारी दिव्य ।
नृप-कन्या तिमि गोपसुचि सुता सनेहिनि नव्य ।।१००

श्रीमिथिलापुर–वासिनी सिय-स्वामिनि प्रियआलि ।
सखी-सहचरी-अनुचरी सकल सरस सुखसालि ।।१०१

अङ्ग-अङ्ग आभरन बर बसन रास–रस–जोग ।
ललीलाल सजि सखिन सुख सौपन सुमन सुभोग ।।१०२

अमित द्विजनि–तारेश–दुति–दमन करन–छवि खान ।
सिंहासन मनिमय तहाँ बैठे युगल सुप्रान ।।१०३

निज-निज साज-समाज सब कृथसे सहित-सनेह ।
गान करन लागी ललित तान बलित गुन–गेह ।।१०४

नटन–भाव दरसन बिसद बीन बजावन बेनु ।
नाना गति ऊरध अरध मध्य गीत मुद–देनु ।।१०५

चंचल चखन नचाय चहुँओर नचन चितचोर ।
युगल-किशोर रिझाय अलि पाइय प्रीति-पटोर ।।१०६

तिन प्रिय परिकर मधि कबहुँ हिलि मिलि परम प्रमोद ।
अहो भाग कब पाइहौं विगत विकल्प बिनोद ।।१०७

आलिन–उर–उत्साह लखि–लली लाल मुदमाल ।
मधुर मनोहर गान तिमि नटन ललित खुसहाल ।।१०८

करि अनूप विधि भरि हृदै उज्वल रस रमनीय ।
युगलकिशोर उछाह-निधि सकल-कला-कमनीय ।।१०९

सखी सनेह सनी करैं वाह–वाह सुधि त्यागि ।
तेहि सुख-सुधा-सबाद-मधि कब पसिहौं मति-पागि ।।११०

लोकालोक हरीशपुर भेदि पार तर तान ।
अति अदभुत दोऊ सुघर सुख–समुद्र–गति–ज्ञान ।।१११

कर–कंजन–कल-कमल गहि नटन नागरिन-संग ।
प्रिया प्रसन्न–निमित्त प्रिय रचत केलि बहु रंग ।।११२

श्रम-सीकर लखि वारि तन-मन-करि व्यजन रसाल।
सिंहासन पधराय छबि झाकन लगी सुबाल ।।११३

हौं तेहि समय सनेहसह युगल ललन दुतिरूप।
मृदु मुसुकानि अपांग प्रिय पेखि जीतिहौं जूप ।।११४

रास-रंग रतिरहस-सुख अङ्ग अतोल अमोल।
प्रियपरिकर-संवलित सजि सिय पिय-रूप-कलोल ।।११५

अति उत्साह अथाह हिय बरधन करि सखि स्वच्छ।
मधुर भोग आरति कलित किये लिये प्रिय पच्छ ।।११६

निरखि नैन-मद-मैन पर प्रेम समेत विचित्र।
नींद-व्याज आलस ललित युगलकिशोर समित्र ।।११७

सखिन सजायो सेज सुचि छीर-सार-सुकमार।
नवल निकुंज अजूब वर रचना रहस-अगार ।।११८

विविध सौंज-सुख-सजन श्रीश्यामाश्याम सुयोग।
अति अनूप अनुराग सजि सौंज सेजसम भोग ।।११९

ललीलाल मुदमाल यह आय जनाय सप्रीति।
चली लेवाय लगाय दृग दोउ दुति बीच सभीति ।।१२०

सुभग-माँझ कौतुक-कला प्रिय परिकर उत्साह।
नटन-गान मुदमय चमत्कार-हास-रसराह ।।१२१

अहो हरित बासर कबहुँ ह्वैहैं हिय हुलसाय।
बसिहौं सरस समाज-बिच चाहत चरित-निकाय ।।१२२

पल-पल प्रति बरवदन-विधु मधुरमरंद-पियूष ।
पीबत तिल नहि तोषिहौं बटवैहौ भल भूष ॥१२३

नाना रंग समेत श्रीलली-लाल सुखपाल ।
बैठि पधारे सैन-सद-सदन शमन-श्रमशाल ॥१२४

सैन-सदन शोभा-सदन शशि दिनमनि शत स्वच्छ ।
अहो सुदिन जब निरखिहौं निज सुनैन परतच्छ ॥१२५

अति अनूप पर्य्यंक मनि मधुर रचित रमनीय ।
सकल सौज मुद मोद-घन-कारन कृत कमनीय ॥१२६

सखी सनेह समेत सुचि सेज सोहावन साजि ।
ललीलाल पधराय तहँ निरखि रही रसराजि ॥१२७

रितु अनुकूल सुसौज तहँ कलित केलि-हित-रंग ।
चहूँ ओर राखत भई सुमिरत सजन उमंग ॥१२८

बीनादिक बाजन विशद झीने सुरन समेत ।
गाय-बजाय रिझाय अलि निरखहिं नेहनिकेत ॥१२९

युगल ललित लोने ललन सोहै सेज अनूप ।
मोहै मन मनसिज सजे सुखमा सरस स्वरूप ॥१३०

अकथ कथा केहि विधि कथन होत विचारन योग ।
युगल अनन्य अली तहाँ पावहि प्रिय-दृग-भोग ॥१३१

अति अनुराग-विवस युगल जीवन-प्राण समान ।
नवल नैन मूंदन लगे पगे प्यार रसखान ॥१३२

मधुर मंजरिन नैन सुठि सैन पाय पट डारि।
सरस समाजन मिलि कबहुँ लखिहौं विमल विहारि ।।१३३

श्रीसियवल्लभ-सेज-सुख चिदविलास रमनीय।
निज निकुंज-अंतर सुमिर पैहौं कल कमनीय ।।१३४

अष्टयाम-उत्सव अमल उत्कंठाधिप धारि।
रहिहौं रसनिधि-धाम-मधि करन कलेवर बारि ।।१३५

शरद सुहावन समै लखि कलित कलाकर ब्योम।
कब सुधि-बुधि विन सुमिरिहौं रासरसिक मुख सोम।१३६

कलित केलि कातिक प्रिया प्रीतम द्यूत अनूप।
दीपमाल-युत जोहिहौं पगि उछाह रस भूप ।।१३७

कबहुँ इन्द्रमनि घन मधुर मोर कंठ दृग देखि।
विह्वल वपु ह्वैहों अहो सउ दिन सुभग सुबेखि ।।१३८

चंपक चामीकर चपल चपला नैन निहारि।
सिय स्वामिनि अङ्ग सुरति करि दैहौं गुनगन वारि।१३९

हिमऋतु युगलकिशोर चितचोर परस्पर रङ्ग।
प्रिय पट पहिरन प्यारयुत जोहि होइहौं दङ्ग ।।१४०

शिशिर वसंत सुपंचमी विमल विनोद विचित्र।
गान-तान सुनिहौं मधुर निरखत रूप पवित्र ।।१४१

होरी रसबोरी अमित गोरिन संग सुरंग।
सिय पिय जोरी जोहिहौं विपुल बढ़ाय उमंग ।।१४२

ललित लाड़िली जीतिहैं पिय यह होरी जंग।
हिय हरषित ह्वैहौं निरखि चखन चढ़ाय सुरंग ।।१४३
ऋतु वसंत कुन्जन कलित केलि विपिन उत्साह।
पिय प्यारी लखिहौं मधुर रस सागर मुद माँह ।१४४
ग्रीषमऋतु जल थल अमल केलि विचित्र विधान।
खसखाने बिच जोहिहौं युगल सुजीवन जान। १४५
पावस ऋतु झूलन झमक सावन सरस निकुंज।
सखिन समेत विलोकिहौं युगल माधुरी मंज ।।१४६
झूलन लखि ललचाय चख चित्त सनेह सजाय।
झुलवैहौं दोऊ ललन नेह निशान बजाय। १४७
सुगुन गान रसखान नित सुनि गैहौं सुधि त्यागी।
सोऊ सुदिन सोहाइहैं रहिहौं युग छवि पागि ।.१४८
कबहुँ अटारी जाय युग जीवन सखिन समेत।
सरस सुघन लखिहौं सुछबि जोहत नेह निकेत ।.१५९
कोटिन केलि कला कलित प्रति पल ऋतु अनुसार।
युगल ललन लोयन निरखि पैहौं शुचि शुखसार ।।१५०
अहोभाग दुख दाग बिन युगल सुराग दिमाग।
चित चितिहौं निशोत नित बिहरत धाम सुबाग ।.१५१
सियवर शौक सुकौमुदी कब छिटकै मम हीय।
बार-बार उत्कंठ उर पुजवैहैं सिय-पिय ।।१५२

श्रीसिय पिय छवि रस सरस हिय अभिलाष सजाय।
बसिहौं सदा सुधाममधि भवभय भान भजाय ॥१५३

भुक्ति मुक्ति चित चाह नहि आस अमल पन एक।
धामवास सजि युगल छवि हेरत रहौं सटेक ॥१५४

मधुर मनोरथ करत कल रीझत राजकुमार।
मिटत मोह ममता मलिन मान-महामद-मार ॥१५५

असत अबल अभिलाषहूँ कीजे सपनेहुं नाहि।
उभय लोक शत शोकसम देनहार द्रुतदाह ॥१५६

उज्वल उत्कंठा सुजन सुनि समुझे सब भाँति।
श्रीसियपिय पावैं अवस नसैं विविध भव-भ्रांति ॥१५७

श्रीसरयूतट गुप्तहरि कुण्ड निर्मलीतीर।
उज्वल उत्कंठा विमल विरच्यो शतसुख-शीर ॥१५८

लली लाल लीला ललित उतकंठा कमनीय।
पढ़त सुनत मनगुनत ही सरसात रति रमनीय ॥१५९

श्रीसतगुरु साकेत सुचि नाम कृपा बल पाय।
उज्वल उत्कंठा कलित रहस कह्यो सरसाय ॥१६०

श्रीयुगलानन्यशरण विरचितायां ललीलाल
लीलोत्कण्ठा पंचमो सामाप्तः



✡ श्रीसीतारामचन्द्राभ्यां नमः ✡

❃ श्रीमते भगवते रामानन्दाचार्याय नमः ❃

।। श्रीहनुमते नमः ।।

।। श्रीसद्गुरवे नमः ।।

।। श्रीमती चन्द्रकलायै नमः ।।

।। श्रीमती चारूशीलायै नमः ।।

श्रीसीताराम उत्कण्ठा प्रकाश

ध्यान मंजरी, उज्जवल उत्कण्ठा,
जुगलोत्कण्ठा प्रकाशिका, विनय चालीसी,
नेह प्रकाश, सन्त विनय शतक

प्रकाशकः—
वैदेही बल्लभ शरण जी
श्रीहनुमानबाग, वासुदेवघाट, श्रीअयोध्याजी

प्रथम बार १०००) सन् २००० (मूल्य १२ रुपये

श्रीजुगलोत्कण्ठा प्रकाशिका

विनय-माला

॥ रसिक उरहार ॥

॥ सोरठा ॥

"रूपसरस" सुखखानि, प्रियप्रीतम की लाड़ली ।
"शुभशीला" सुखदानि, पाद-मंजु पंकज अली ॥१
"चारुशिला" ! प्रतिपाल, शरणागत की हो सदा ।
तुम बिन सियवरलाल, कबहुँ नहीं आनन्ददा ॥२

॥ दोहा ॥

परिकरि युत श्रीस्वामिनी, सुख बिबर्धनी साथ ।
हमको दीजे सुख सदा, अब गहि लीजे हाथ ॥३
पद पंकज देखे बिना, बृथा जन्म जग जात ।
सीतावर युत मिलहु अब, छिन पल कलप बिहात ॥४
हे सीते नृप नन्दिनी, हे रघुराज कुमार ।
तुम बिनु व्याकुल चितरहत, रही न नेकु सम्हार ॥५
असन बसन कुलकानतजि, सब से भई उदास ।
बिरह अग्नि बाढ़त भई, तापै पवन उसांस ॥६
ताहू पर घृत परत है, टपकत नयनन नीर ।
बुझत नहीं बाढ़त अधिक, को जानै यह पीर ॥७

गृह बाहर बन में फिरूँ, कहूँ न चित ठहराय ।
जहँ तहँ जिय घबरात है, अब दुख सहो न जाय ।।८
नैन मूँदि कबहूँ रहौं, बैठी गृह एकंत ।
सूरति कौ अनुभव करौं, खोले फिर बिलपंत ।।९
तापर फिर लीला रचित, चित अवलम्बन हेत ।
प्रिय प्रीतम की कांति वह, कछु सीतल कर देत ।।१०
तदपि चित्त माने नहीं, बिरह ज्वाल के जोर ।
घन बिजुली सम दर्श दो, श्यामल गौर किशोर ।।११
बदन माधुरी गर्ज रव, बचनामृत युत पीर ।
बिरह अग्नि बूझे जबहिं, मिलन वर्ष हो नीर ।।१२
हे बिधु बदनी जानकी ! हे सीतावर श्याम !
कब दिखाइहो बिधु बदन, पद पंकज अभिराम ।।१३
दृग चकोर मन भ्रमर ह्वैहैं, रसना चातृक नाम ।
कब देखें प्रीतम प्रिया, सुख बिलास के धाम ।।१४
कबहुँ कि वह दिन होयगो, प्रिय प्रीतम के संग ।
भाव सहित अवलोकिहौं, जिमि चकोर परसङ्ग ।।१५
पद पंकज की माधुरी, मन मधुकर ह्वैहै लीन ।
मिलन विना व्याकुल रहत, बिरह ब्यथा तन छीन ।।१६
हे श्रीसीते स्वामिनी ! रसना रटत सुनाम ।
चातक सम गति हो रही, सुनिये करुणाधाम ।।१७

दृगन छबीली छबि बसी, जल समुद्र जिमि मीन।
ताहि बिलग मतिकीजिए, हो तुम परम प्रबीन ॥१८

बिथा होत जिमि मीन के, बिछुरे प्रीतम नीर।
तैसी गति मम देखि कै, कृपा करहु रघुबीर ॥१६

देखत जग मैं मधुरता, सुन्दरि सुन्दर रूप।
तन ब्याकुल ह्वै जातबिन, देखे रूप अनूप ॥२०

रूप अनूप दिखाय कै, कीजै नैन सनाथ।
अछत नाथ अस क्योंकरो, देउ प्रिया को साथ ॥२१

सुनि कोकिलकी कुहुक मृदु, उठत हिये में हूक।
सिसिक–२ कर मीजती, क्षमा करो अब चूक ॥२२

हम तो सब औगुन भरी, तुम हौ गुणकी खानि।
गुनन आपने रीझिये, बिरदावलि उर आनि ॥२३

नटत मयूरी देखि कै, बिरह सतावै मोय।
केकि कंठ तन की सुदुति, लखि-भुज मन-भ्रम होय ॥२४

कब भ्रम तुम यह मेटिहौ, हे नृपराजकिशोर।
गलबाही दीन्हे लखै, गौर श्याम चितचोर ॥२५

देखत नृप तनया जगत, प्राकृत राजकुमार।
मिलिहो हमसे कबहुँ अस, जस लौकिक व्योहार ॥२६

सब जग अपने मित्र युत, सुख भोगत दिन रैन।
हमकोदुख दिनप्रतिअधिक, छिन पल कबहुँ न चैन ॥२७

हे सीते करुणा अयन, जतन बनत नहिं एक।
केवल कृपा कटाक्ष को, चातक कीसी टेक ।।२८
स्वाति-बून्द पिययुत मिलन, मेरे जी की आस।
पूरण कबहूँ कीजियो, जबलौं घट में स्वांस ।।२९
और कृपा कर दीजियो, जब लग तन में प्रान।
प्राणनाथयुत नाम तब, रटौ छोड़ि अभिमान ।।३०
चातक रटि घटि जाव भल, घटे न मेरो नेह।
चरण कमल मकरंद की, दृढ़ भौरी करि लेह ।३१
बिरह तपावै मोहिं ज्यों, बाढ़े अधिक सनेह।
जैसे कुन्दन के तपै, निरमल होवै देह ।।३२
काम क्रोध मद लोभ ये, जग में करे सनेह।
तव सनेह के रिपु अहैं, नेकु न परसे देह ।।३३
अरुण प्रीति छबि घटा की, अटा बिलोकी जाय।
अँसुवन झर बरसन लगी, तन सब दई भिजाय ।।३४
भई शिथिल नहिं चलसकै, सीतल स्वांस समीर।
तन कँपाय ब्याकुल करी, बेगि मिलो रघुबीर ।।३५
बहुबिधि भूषण नगजड़ित, देखि चढ़त है पीर।
कब पहिरैहौं निज करन, सुन्दर श्याम सरीर ।।३६
बसन अमौलिक देखि कैं, मन न धरत है धीर।
प्रिय प्रीतम के योग यह, मणिन जड़ित है चीर ।।३७

रुचि-२ बसन सम्हार तन, कब पहिनैहौं पीय।
कोमल पुहुपहु ते अधिक, तन सुन्दर कमनीय ॥३८
अंग सुगंध बहु बिधि धरे, मणिन पात्र रमणीय।
पिय प्यारी के उर लसैं, सुफल होय तब जीय ॥३९
राज साज साहित्य युत, सब परिकर लिय संग।
निसि दिन बिहरैंगे कबहुँ, महलनि कुंज अभंग ॥४०
बन विनोद क्रीड़ा ललित, सांझ सबेरे बाग।
कब देखैंगे नैन यह, जगिहैं हमरो भाग ॥४१
फूल बटिका महल की, बिहरत युगल किशोर।
कबहुँ कि यह छबि देखिहौं, मनहरनी चितचोर ॥४२
जलविहार सरयू सलिल, करत सखीनयुत लाल।
कब देखैं झीने बसन, चिपट रहे छबि जाल ॥४३
कबहुँ परस्पर प्रीतिबस, अरस परस शृङ्गार।
करत देखिहौं प्राणपति, महलनि कुंज मझार ॥४४
रचि सिङ्गार दोऊ खड़े, दै हित सो गलबांहि।
कोटि रतन तब वारिहों, तन मन से बलि जांहि ॥४५
बिबिध भोग उपभोग के, सौंज अनेकन रीति।
कब देखैं जीवत युगल, भरे प्रेम अरु प्रीति ॥४६
हे प्यारी ! कब देखिहौं, कर कमलन में ग्रास।
परिकरयुत तुम जेंवती, पिय सँग भरी हुलास ॥४७

थाल शेष कर कमल करि, अधर सुधा रस पर्स।
कब प्रसाद हमको मिलै, मिटिहैं रसना तर्स ॥४८

फिर बीड़ी सौरभ रली, हँसि लैहौं मुख कंजु।
अतर लगा साफल्य ह्वै, कब मेरे कर मंजु ॥४९

युगल सहचरी संग में; दुज निन्दक मुखचंद।
सभा सदन कब देखि हौं, पैहौं परम अनन्द ॥५०

सियपिय सहचरि संग में, चन्द्रमुखी बहु बाम।
चन्द्रबदन चन्द्राननी, रूपलता सुखधाम ॥५१

हेमलता हेमांगिनी, कनकलता कनकंग।
पिकवयनी मृगलोचनी, सुन्दरि, रामा संग। ५२

लता सिंगार युगल प्रिय, सखी सुशील किशोरि।
नारि संग अगणित खड़ी, जैसे चन्द्र चकोरि। ५३

रूप नदी सी बहि रही, आवैं झुण्डन संग।
सभा सदन में भरत हैं, मिलि समुद्र जिमि गंग ॥५४

रूपलतिका सम फबि रही, किती झरोखन जाल।
सियपिय मुख राका ससी, लखि छबि भई निहाल ॥५५

सुमनलता कर कमल में, लीने पुष्पन साज।
चवँर मोरछल कोउ करैं; पानदान कर छाज ॥५६

छत्र, अत्र; पुष्पन रचित, बल्लभ, छरी अनेक।
ध्वज, पताक, साहित्य सब, लीने जथा विबेक ॥५७

अपने अपने थल खड़ी; लखती रूप अनूप।
युगल माधुरी देखि कै, डूब रही रस कूप ।।५८

गान तान बादित्र बहु, रंभादिक के नृत्य।
सिय पिय सनमुख हो रहे, मौज पाय कृत कृत्य ।।५९

चारुसिला लगि कान से, बातें कछू करंत।
रूप सर्स कर बांटती, वीड़ा अतर लसंत ।।६०

सुख बिबर्धनी कर लिये, अतरदान बहु मोल।
शुभलीला कछु समयलखि, बिनय करै मृदु बोल ।।६१

कब देखौं वह माधुरी, जनक लाड़िली संग।
प्रीतम हित बतियां करत, उर अति मोद उमंग ।।९२

सुरति बिहार बहार की, बातें अलिन समाज।
सुनि सकोच दृग लाड़िली, देखहिं बदन सलाज ।।६३

यह छबि मुग्धा दशा की, कही कौन पै जाय।
जिहि देखे बिन जगत में, आयू बृथा सिराय ।।६४

लपट सुगंधन की उठत, चित उचाट हो जात।
जगत उदासी होति है, दवी बिरह लपटात ।।६५

प्रीतम अंग सुगंध को, तरस उठत है जीय।
स्वांस गंध युत माधुरी, याद करावत पीय ।।६६

करत परस्पर बारता, श्री स्वामिनी सहेत।
कब लैहैं यह नासिका, मुख सुबास सुख केत ।।६७

कोटि सुगँधनिकी जननि, प्रीतम अंग सुबास।
सीतापति अंभोज मुख, मिलत लसै सुखरास ॥६८

कबहुंकि वह दिन होयगो, जनकलली के पास।
चेरी ह्वै तेरी रहौं, लैहौं अङ्ग सुबास ॥६९

राग तान सब जगत के बिरह बढ़ावन हार।
तुम बिन हे सिय स्वामिनी, ह्वै करौंत सितार ॥७०

राग रास मंडल रचैं, श्री महाराजकुमार।
श्रवन कवहुँ वह सुनौंगी, जनकसुता सुकुमार ॥७१

ब्रह्मादिक की गति नहीं, सुनैं आय मुख राग।
चेरी तन धारे बिना, दूर महल अरु बाग ॥७२

नूपुर भूषण झमक धुनि, श्रवन सुनै कब मोर।
जिहिं धुनि संग चितवत रहौं, श्री रघुराज किशोर ॥७३

कब लखि हैं नख माधुरी, पद पंकज दृग मोर।
जिन ससि को तरसत रहैं, मुनि गन भये चकोर ॥७४

केवल कृपा कटाक्ष से, तिनके दरशन होय।
शरणागत प्रतिपाल हो, मोहिं भरोसो सोय ॥७५

परम अलौकिक राग वह, पद अनुरागी भोग।
बीणा युत कव श्रवन में, परिहैं जीवन जोग ॥७६

मधुर शील कोमल ललित, नेह भरे वह बोल।
श्रवनन में कब सुनौंगी, रले सुगंध अमोल ॥७७

हे नृप नन्दिनी लाड़िली, प्यारी राजकिशोरि।
रास माधुरी देखि हैं, जैसे चन्द्र चकोरि ।।७८
शरद रैन के चन्द्रमा, बहुत कठिन दुख देत।
तुम बिन विष सम श्रवत है, कुंजन महल निकेत ।।७९
विरह विथा बाढ़ी अधिक, लखिकै चन्द्र प्रकाश।
स्वांस-२ प्रति कठिन है, लगी मिलन की आस ।।८०
बेगि मिलहु करुणा अयन, मति कठोर चित होव।
अस सुभाव नहिं रावरो, कृपा दृष्टि से जोव ।८१
बालपनै शरणै लई, तब तो नहिं कछु बोध।
बोध भये कस दूर अब, तन मन से लो सोध ।।८२
तुमसे बिमुखी होइ कै, भटकी जन्म अनेक।
सो दुख आपहि देखि कै, दीनों मोहि बिबेक ।।८३
दै बिबेक अपनाय कै, शरणै लई कृपाल।
शरणागत प्रतिपाल तुम, मोको करो निहाल ।।८४
सरद रैनि की चांदनी, बिरहत युगलकिशोर।
नृत्य सहित दंपति लखै, सखि मंडलि चहुँ ओर ।।८५
करैं मान जब लाड़िली, प्रीति बिबश तुम सङ्ग।
कब मनाय सिय स्वामिनी, आन बटाऊँ रङ्ग ।।८६
यह सेवा सुख देउगी, अनुचरि आपनि जान।
हे सीते मम स्वामिनी, तुम बिन गतिनहिंआन ।।८७

कब दिखाइहौ मान छबि, रास मण्डली ऐन ।
मुरक चलन तिरछी नजर, पिय तन चितवन नैन ।।८८

बहुरि मान को छोड़ि कै, प्रीतम उर उमगाय ।
मिलत देखिहैं नैन यह, जन्म सुफल हो जाय ।।८९

रास श्रमित मुखस्वेदकन, प्यारी तन झलकंत ।
करिहौं कब पंखा पवन, हरिहौं श्रम हुलसंत ।।९०

सैन कुंज पुनि गवन करि, करिहो सखिन निहाल ।
सो छबि कब हम देखिहौं, प्रीतम संग रसाल ।।९१

मिल बिलसत प्रीतम प्रिया, फँसे रूप छबि जाल ।
तन मन से अंगन रमे, प्रेम छके रस चाल ।।९२

बातैं केलि कलान की, शील सकुचि दृग लाज ।
कब देखौंगी दृगन हम, रस बस रस के काज ।।९३

रस माते रस पान कर, रस राते तव नैन ।
रस छाके रसकेलि में, नैन मते छबि मैन ।।९४

नैनन लखि छकि हैं कबै, मैन छकी दृग सैन ।
नैन पलक लागै नहीं, मुख से बनै न बैन ।।९५

यह जी की अभिलाख मम, पुरवो जनक दुलारि ।
कर सिर धर पुचकारिये, प्यारी राजकुमारि ।।९६

शरणागत प्रतिपाल तुम, शरणै आई जान ।
चेरी ह्वै तेरी रहूँ, चरण खवासिन मान ।।९७

कब हम देखौं लाड़िली, छकी छबीली कांत।
सिथिल बदन भूषण बसन, पिया केलि सुर तांत ॥९८

बिथुरी अलकैं बदन पर, मनहुँ व्याल छबि छीनि।
आय बसी रस पान को, परिकर मन डस लीनि ॥९९

सो समार है करन कब, हे श्री राजकुमारि।
कब लखिहैं बिधुबदन छबि, जीवन प्राण अधारि ।.१००

भूषन बसन सम्हारि हैं, सुंदरि सकल सुदेश।
पलक पीक कज्जल अधर, यह छबि लखै हमेश ॥१०१

मुख अंचल सों पोंछि कैं, नैन सम्हारे रेख।
यह सेवा सुख भोग में, रहूँ चित्रवत देख ॥१०२

हे प्यारी सिय स्वामिनी, तुम बिन गति नहिं आन।
दासी को नहिं त्यागिये, गहो कमल कर मान ॥१०३

दासी जन्म अनेक में, सहे कलेस अलेख।
हे करुणाकर लाड़िली, दया दृष्टि अब पेख ॥१०४

जनक बंस अवतंस तुम, हम सी तुमें अनेक।
तुम सी हम को एक हो, करिये हिये विबेक ॥१०५

बहुत काल बीते जगत, भ्रमत बिना पद कंजु।
अली रूप करि राखिये, पद पंकज की मंजु ॥१०६

हे करुणाकर जानकी, राम जानकीजान।
सब परिकर की जान तुम, हे मम जीवन प्रान ॥१०७

कब दिखाइहो महल सुख, पय पीवत रुचि रंग ।
श्री महाराजकिशोर युत, सयन समय की संग ।।१०८

अलिगन पान कराय के, सयन करत सुख दैन ।
प्रीतम संग पौढ़ी महल, लखि छबि छकिहैं नैन ।।१०९

चरणकमल सेवा करूँ, उर नैनन से लाय ।
मनहु दरिद्री जनम को, चिन्तामणि कर पाय ।।११०

तिहि सुख से सत कोटि गुन, मानै, मेरो हीय ।
मन वांछित यह दीजिये, पियकी जीवन जीय ।।१११

कबहुँकि वह दिन आइहै, प्रात समय करि कृत्य ।
"रूप सर्स" पग लागि अरु,'चारुशीलाजी' नित्य ।।११२

प्रीति सहित 'सुखबर्धनी', अपने परिकर युवत ।
सिय पिय महलनि जायगी, पहिने भूषन मुक्त ।।११३

गान नृत्य वादित्र युत, प्रीति भरी रस तान ।
दंपति जस की गाइहैं, जागो जीवन प्रान ।।११४

हे प्यारी नृपलाड़िली, श्री महराजकुमारि ।
आरत जन हम दरस को, झांकौ नैंन उघारि ।।११५

तुम बिन तलफत रैन सब, बीती चतुर सुजान ।
दृगन ओट नहिं कीजिये, हे मम जीवन प्रान ।।११६

चरण शरण में राखिये, चेरी नेरी मान ।
मान बड़ाई ना चहूँ, मम जीवन सुखखान ।।११७

लाल लाड़िली छबि छके, जागे महलनि कुंज।
कब यह छबि मैं देखिहौं, जगि हैं भाग सपुंज ॥११८

मंगल अमित सजायकै, मंगल भवन अनूप।
मंगलमय जब होय दिन, देखौं मंगल रूप ॥११९

सभा मंगला को मिलन, मंगल दिवस सुभूप।
मंगल बेला समय मैं, देखौं युगल स्वरूप ॥१२०

कोटि जन्म भटकत गये, संसृति सहत कलेस।
साधन करि-२ थक गये, धरे कौन नहि भेस ॥१२१

करि करुणा अपनाय जब, गुरु ह्वै पकरी बांह।
चरण शरण में लै लई, हस्त कमल की छांह ॥१२२

जो जन अपनी शरण में, लीने युगल किशोर।
तिन सब सम में हौं नहीं, पतितन में सिरमोर ॥१२३

नाम पतितपावन जु तव, जग श्रुति में बिख्यात।
सोहू सुमिरन नहि बने, तहु चाहत कुशलात ॥१२४

प्रणतपाल की रीति जो, वेद कहत हैं चार।
सो अवलंबन चित्त को, बेगिहि करो सम्हारि ॥१२५

कर्म बचन मन ते कहूँ, हे मिथिलेश किशोरि।
चरण कमल तजि रावरी, नहीं ठौर किहु ँ ओरि ॥१२६

हे करुणाकरि लाड़िली, इतै मिमौ अब आय।
कै उतही में आ मिलूं, बेगहि लेहु बुलाय ॥१२७

चरण कमल तुमरे बिना, तलफत हौं दिन रैन ।
कहब लिखब नहिं बनत अब, थकित नैन अरु बैन ।।१२८

तन मनहू अब सिथिल है, बिरह ब्यापि गई पीर ।
कब देखौं छबि नैन भरि, स्यामल गौर शरीर ।।१२९

'बिनयमाल' दोहावली, "शुभसीला" की जान ।
उर धरि पावन कीजिये, मेरी जीवन प्रान ।।१३०

दोउ उर धरि मम उर बसो, बिरह बिथा के साथ ।
जब लगि करुणायुत नहीं, प्रगट गहो तुम हाथ ।।१३१

श्री सरयू श्री अवध तुम, रसिकनिवासी धाम ।
पवनसुवन परिकर अरज, बेगि कीजिये काम ।।१३२

परमारथ के रूप तुम, हम हैं स्वारथ भूप ।
जांचति द्वारे पै खड़ी, चाहैं सियबर रूप ।।१३३

आन द्वार जाचौं नहीं, दीजो यह दृढ़ नेम ।
मेरी ओर निबाहियो, सीतापति पद प्रेम ।।१३४

भक्ति दान पाऊँ बहुरि, अमल अनूपम नित्त ।
देत रहौ अहलाद युत, लगन लालची चित्त ।।१३५

"शुभशीला" लीला ललित, प्रीतम प्रिया बिहार ।
युगलोत्कंठ प्रकाशिका, अनुरागी उरहार ।।१३६

इति श्रीयुगलोत्कंठा प्रकाशिका सम्पूर्णम्

श्री विनय चालीसी

॥ दोहा ॥

हे सीते नृप नंदिनी, हे रघुराज किशोर।
तुम विन तलफत हूँ सदा, कृपा करो मम ओर ॥१
हे निमि बन्श उजागरी, हे रघुबर कुल भाँन।
कृपा करो जन जानके, मैं हूँ निपट अजाँन ॥२
हे प्रीतम प्यारी सदा, हे प्रिय बल्लभ लाल।
चाहत कृपा कटाक्ष को, मेटौ भव के जाल ॥३
कृपा रूपणीं जानकी, कृपा रूप रघुनाथ।
कृपा कटाक्ष निहारिये, राखो अपने साथ ॥४
हे चन्द्र बदन मृग लोचनी, कमल नयन श्रीराम।
कृपा तुम्हारी चाहिये, बसिये मम उर धाम ॥५
हे श्रीचारुशीला की स्वामिनी, रूपलता की प्रान।
रामलला की प्राण प्रिया, सदा रहो मम ध्यान ॥६
भूम सुता हे लाड़ली, हे सियबर सुखदान।
तुम बिन जीवन है वृथा, कृपा करो सुख खान ॥७
रघुबर प्यारी लाड़ली लाड़िली प्यारे राम।
कनकभवन की कुंजमें बिहरत हैं सुखधाम ॥८
मंद हसन मुस्कयान पर बलिहारी नृपलाल।
चाहत कृपा कटाक्षको निरखत होत निहाल ॥९

गलबहियां कब देखिहौं इन नयन सियराम।
कोटि चन्द्र छबि जगमगी लज्जित कोटिन काम ॥१०
चवँर छत्र सूरज मुखी लीन्हे सब सुख साज।
पान खवावत सुघर अलि चितवन में बहुलाज ॥११
वो छबि कब हम देखिहैं नयन चकोरी होय।
युगल चन्द्रमुख देखिये कृपा रावरी होय ॥१२
रङ्ग रंगीली लाड़ली रङ्ग रंगीलो लाल।
रङ्ग रंगीली अलिन में कब देखों सियलाल ॥१३
कारुण्यामृत वर्षिनी सीते गुनकी खान।
जुगलरूप हिरदें बसो यह दीजे बरदान ॥१४
काम क्रोध मद लोभ प्रभु मर्दगर्द करिदीन।
मन नहि मेरे हाथ में विषय बासना लीन ॥१५
ऐसो मन कब होयगो, छबि समुद्र मन मीन।
बिछुरत छोड़े प्रान को, रहै माधुरी लीन ॥१६
मैं चेरी हूँ चरनकी, राखो सदा हजुर।
प्रेम भक्ति अनपावनी, देहु सजीवन मूर ॥१७
हे सरजू जग पाँवनी, त्रिभुवन तारन हार।
दरस परस के करतही; नासत पाप पहार ॥१८
अवध अवधको देते हैं, अवध धाम निज धाम।
अवध धाम धामाधिपति, जहँ बिहरें सियाराम ॥१९
अवधपुरी बसिये सदा, करि सरजू जल पान।
रसना से सिय पिय रटो, हिर्दे में धरि ध्यान ॥२०

गुरू कृपा से बनैगी, गुरू लखावैं राम।
गुरु बिन भटकत जगत में, कोई न आवै काम ॥२१

गुरु कहे नाते जगत के, त्याग त्याग गहु सार।
सीते तेरी स्वामिनी, रघुनन्दन उर हार ॥२२

भइ कृपा श्रीगुरुन की नातौ दीन दृढ़ाय!
चारुशीला चारज करी, मन की तर्क मिटाय ॥२३

भई भाँवना महल की, सेवा कर में लीन।
अष्ट भवन की कुंज में, सेवा कर चित दीन ॥२४

समय–समय तत्पर रहें, पिय प्यारी अनुकूल।
युगल माधुरी छबि निरखि, मिटे जगत के सूल ॥२५

हे सीते नृपनंदिनी, हे प्रीतम चितचोर।
नवल बधू की वीटिका, लीजे नवल किशोर ॥२६

हँस बीरी रघुबर लई, सिय मुख पंकज दीन।
सिया लीन कर कञ्ज में, प्रीतम मुख धरि दीन ॥२७

निरखि सहचरी युगल छबि, बार-बार बलिहार।
करत निछावर विविधि विधि, गज मोतिन के हार ॥२८

रतन सिंहासन राजहीं, गलबहियाँ दिये लाल।
चहुँ दिशि अलिगन सेवती, नवल रँगीली बाल ॥२९

मधुर मधुर बाजा बजे, बीन मृदङ्ग सितार।
रास रङ्ग रासस्थली, रचना रची अपार ॥३०

चहुँ दिशि अलि अपार हैं भईं मण्डलाकार ।
हाव भाव कटाक्ष को करत सखी बहु बार ।।३१
मध्य लड़ैती लालजू, रमत सखिन के संग ।
कबहुँ युगल मिलि नृत्यत, थेइ थेइ फरकत अंग ।।३२
यहि बिधि सबको सुख दियो नवल लड़ैती लाल ।
बैठे गलबहियाँ दिये फसी सखी छबि जाल । ३३
भोग सकल आगे धरे, छै रस चार प्रकार ।
जेंवत युगल किशोर मिलि, करत बिनोद अपार ।।३४
अचमन करि बीरी लई, अतर लगायो अङ्ग ।
फूल माल पहिराय उर, राजत सिय पिय सङ्ग ।।३५
चंवर छत्र सूरज मुखी, कोई पंखा ढोर ।
अपनी-२ सौंज लिये, सेवत सखी करोर ।।३६
यहि सुख में चित दीजिये, सकल बासना त्याग ।
सेवा सिय पिय अहरनिसि, चरनन में रहु लाग ।।३७
कृपा करी श्रीजानकी, पायो महल निवास ।
युगल चरन सेवत रहौं, दई खवासी खास ।।३८
योग यज्ञ तीरथ बरत, नहीं तुलत यहि साथ ।
सब साधन को फल यही, सेवो सीता नाथ ।।३९
रूपलता बिनती करी; सुनिये लड़ैती लाल ।
राखो सदा हजूर में, तुम हौ दीन दयाल ।।४०

इति श्रीरूपलता कृत विनय चालीसी सम्पूर्णम्

श्री बालअली कृत नेह प्रकाश

॥ दोहा ॥

भूषण नग जगमग रहे, दरश करत बड़ भागि ।
जनु दृगसों अनुराग कर, मन तन सों रहे लागि ॥१

मुक्तामाल कि खुभि रही, प्रिया हँसनि लगि हीय ।
रहे अङ्गसों उरझि अकि, सज्जन मन कमनीय ॥२

गूढ़ वेद वेदांत को, निज सिद्धांत स्वरूप ।
जयति सिया अह्लादिनी, शक्ति-शक्ति गनभूप ॥३

प्रकृति पुरुषते जे परे, परातत्व रस रासि ।
सो वह परम उपासना, वहै जु परम उपासि ॥४

एकाकी नहि रमन ह्वैं, चहत सहायहि सोइ ।
रमत एकही ब्रह्म यह, पति पत्नी तनु होइ ॥५

जग जिनके सुख सिंधु के, लव उप जीवत जीव ।
पगे प्रेम रस स्वाद सों, रमत प्रीया अरु पीव ॥६

यह सब साज समाज सुख, धाम परेश समान ।
काल कर्म गुण प्रकृतितै, परतर जानत जान ॥७

॥ सोरठा ॥

महल बहुत छबिमान, जरे जरायनि जगमगे ।
तने घने सुबितान, परदाबने बिछावने ॥८

॥ दोहा ॥

सींचे बिबिधि सुगन्धनव, मुक्ता बंदन माल।
चहुँदिशि अगणित नगनयुत, बने झरोखा जाल ॥९
सुन्दर गादी गेंडुवा, बिबिधि खेल के साज।
युगल चरण सेवैं तहां, प्रमुदित सखी समाज ॥१०
श्री बिमलारु बिशारदा, बिजया बामाबाम।
कमला कांतिमती कला, केलि, कोविदा नाम ॥११
कामा केशि किशोरिका, कांचि कोशला कालि।
कंजा क्षीरु कलावती, कंजलोचना आलि ॥१२
कुँजा कलिका कोकिला, काशि कृपाला जानि।
कल्याणी गन कुंकुमा, कृपा पूरणा मानि ॥१३
कृष्ण शारिका कामदा, कृपावती सुखरूप।
चन्द्रा चन्द्राकला अली, चन्द्राननी अनूप ॥१४
चम्पक बरणी चन्द्रिका, चारु दरशना बाल।
चारुद तीरू चकोरिका, पुनिगण चम्पक माल ॥१५
देव वर्णिनी देविका, देव रूपिणी नारि।
देवी दुर्गा दामिनी, दैवज्ञा उर धारि ॥१६
गनिज्ञाना गुण सागरा, ज्ञप्ति गुणज्ञातीय।
नन्दानवलासी नवल, नागरि अतिकमनीय ॥१७
प्रेमा परमा पावनी, प्रेमप्रदा तिहि ठौर।
प्रियंबदा परज्ञा परा, भनि पौढ़ा अलिऔर ॥१८

भाव विदा भावनि भवा, भासि भावरा भीरू।
मुग्धा मुदा मनोरमा, सखि मृग सावा धीरू ।।१९
मोद दायका माधवी, मृगनाभी शिरनाइ।
मानिनि माधुरि मंगला, मान कोविदा गाइ ।।२०
रहसज्ञा रसरूपिणी, रम्या रामा लेखि।
और रमा रतिबर्द्धिनी, रोहा उर्णि विशेखि ।।२१
शांता सुखदा स्वच्छदा, सीमंतिनि उरआनि।
श्यामासती सुमध्यमा, साधु मती सुख साखि ।।२२
श्रृङ्गारा चतुरा सुरसि, साहसिका सुकेशि।
सुरा सुन्दरी शारदा, भनि सांभवी सुदेशि ।।२३
सुरभि सरूपा, सागरा, संज्ञा नारि सुनामि।
शांति रूपिणी शंकरी, सुप्रिया सुछेपाभामि ।।२४

।। सोरठा ।।

यद्यपि अली अपार, मुख्य गनी गणनायक।
द्वय हजार हजार, यक यक कि सखि किंकरी ।।२५

।। दोहा ।।

तुल्यबेश गुण रूपसखि, न्यून किंकरी जानि।
गति बल धन सुख सबनिको, एक मैथिली मानि ।।२६
दया दृष्टि सर्बेश्वरी, दइसेवा जो जाहि।
भरी प्रेम आनन्द रस, सखी करत सो ताहि ।।२७

केश प्रसाधन करहिं कोउ, सुरभि सुतेल चढ़ाई ।
पहिरावहि धूपित बसन, कोऊ उबटि नहवाई ।।२८
कोउ अलि बिबिध सुगन्धयुत, रचहिं वेष शृङ्गार ।
उष्ण असन बहुरसन दै, बारि सुरभि हिमसार ।।२९
बीरी ललित सवांरि अलि, दुहूं ललन कर देहिं ।
बड़भागिन तांबूल कोउ, झुकि पसारि कर लेहिं ।।३०
गहे सो चामर छत्र कोउ, क्रीड़न गन्ध रसाल ।
बसन बिभूषण आदरस, कोउ कुसुमन की माल ।।३१
ठाढ़ी अलि चहुँ ओर कों, रचहिं विछौना वान ।
धरहिं वाद्य पुनि करहिं कोउ, उघटि नृत्य सुरगान ।।३२
रीझि अली दुहुँ ललन छबि, निरखि बलैया लेहिं ।
राई लोन उतारि पुनि, बारि अपनपौं देहिं ।।३३
अनगिनती गिनतीन मैं, निपटहु कपट निहारि ।
सिय कीनी चेरी चरण, सीस नवावत नारि ।।३४
तिन मधि बिहरत रँग भरे, नवल किशोर किशोरि ।
नेकन न्यारे होत कहुँ बँधे प्रेम की डोरि ।।३५
मुख छबि मिलि इक मुकुर मैं, कहुँ निरखत दृगकोर ।
कबहुँक इकटक परसपर, ह्वै रहे चन्द्र चकोर ।।३६
असुवन अंतर करत लखि, प्रिय दरशन बिच आई ।
निंदत दोउ आनन्द को, ललन हिये अकुलाइ ।।३७

कबहुँ नेह के भारभरि, लपटि लटकि रहे दोउ ।
छके प्रेम मादिक पिये, रहत न तन सुधि कोउ ।।३८

कबहुँ कुवँर दोउ परसपर, निजकर करत सिंगार ।
बीरी खात खवात पुनि, बहुबिधि करत बिहार ।।३९

कबहुँ केलि कंदुक गहत, कहुँ पासन सतरंज ।
कबहुँक हित बतियां करत, बढ़त मंजुरस पुंज ।।४०

।। नायक बचन सोरठा ।।

किये सपथ कहुँ तोंहि, प्राण प्रिया निज हीय की ।
अस न अपनपौ मोंहि, जैसी प्रिय तुम लगतिहौ ।।४१

।। दोहा ।।

मिलौं कोटि ब्रह्मांड हूँ, अस न मोंहि आनन्द ।
होतजु तब मुख कमल को, पान करत मकरंद ।।४२

श्रवण नैनमन तुम बसे, और न कछू सुहात ।
तेरीहित चितवनि उपर, वारे सब सुख जात ।।४३

मेरे हिय आनन्द को, तुमहीं प्रिये निदान ।
हौजिय की जीवन जरी, प्राननहूँ के प्रान ।।४४

निरखत तुम मुख कंज छवि, पलक न परत सुहाय ।
धन्य अपनपौ गनत हौं, तुमसो धन पाय ।।४५

तेरे किंकरि वर्ग को, हौं हौं सदा अधीन ।
देउ अपनपौ दीन ह्वै, मैं न गनौ कछु दीन ।।४६

प्रेम भरे प्रिय बचन सुनि, प्रिया मधुर मुसकाय ।
बारि विभूषण बचन पर लिये लाल उरलाय ॥४७

॥ सोरठा ॥

रंग रंगीले लाल, रंग रंगीली लाड़िली ।
बिहरत नैन बिशाल, रंग रंगीली अलिन में ॥४८

॥ दोहा ॥

बहु सुगंध कुसुमन रची, दुग्ध फेन समसैंन ।
ऐन मैन मन अलिन यह, रचै मैन को ऐन ॥४९
सैन साल मेंहित भरे, तापर पौढ़त आइ ।
रसमन बचन अगम्यसों, कहौ कौन पै जाइ ॥५०
नील पीत छबि सों भरे, पहिरे बसन सुरंग ।
जनु दंपति यक रूप ह्वै, परसत प्यारे अंग ॥५१
नील पीत नव बसन छबि, हिलिमिलि भये यकरंग ।
हरे हरे अलि कहत हैं, हिये धरि सिय पिय अंग ।५२
रस बिलसत प्रीतम सुखहि, चिर निशिचाह प्रवीन ।
चन्द्रकला चंद्रहि निरखि, मधुरजंत्र सुरकीन ॥५३
सुख निद्रा पौढ़े उरध, नारी स्वरसे होय ।
प्रेम समाधि लगी मनो, सखि जानत सूखसोय ॥५४
अलि कुकुट धुनि सुनि, डरे, रविहि देत यह टेर ।
कहि गुरूजन ऐहैं इहां, भलो नहीं यह बेर ॥५५

अमल सेज पर कमल से, दृगन सलोने गात ।
निशि हुलसे बिलसे लसे, अलसे उठे बिभात ।।५६
जगे कुवँर रस रंग भरे, पगे परस्पर प्रेम ।
उमगे गल बहियां लगे; पगेकि मरकत हेम ।।५७
कहि पिय-२ प्यारी बिवस, नहि तन बसन सम्हाल ।
घुर्मित दृग दोउ झुकि रहे, रस मतवारे लाल ।।५८
महाप्रेम आवेसते, भये तन मय आकार ।
हौं प्रीतम हौंहीं प्रिया, यह रहि गयो बिचार ।।५९

॥ सोरठा ॥

उलटि बढ़ीतव प्रीति, नवल लड़ैती लाल हिय ।
कै बहुरचो वहरीति, प्रेम स्वाद बहु विधि लहे ।।६०

॥ दोहा ॥

नेह सरोवर कुवँर दोउ, रहे फूलि नवकंज ।
अनुरागी अलि अलिनके, लपटे लोचन मंजु ।।६१
दंपति प्रेम पयोधि में, जो दृगदेत सुभाइ ।
सुधि बुधि सब बिसरत तहाँ, रहे सुबिसमै पाइ ।।६२
कबहुँक सुन्दर डोल महि, राजत युगल किशोर ।
अद्भुत छबि बाढ़ी तहाँ, ठाढ़ी अलि चहुं ओर ।।६३
हिलिमिलि झूलत डोल दोउ, अलिहिय हरने लाल ।
लसी युगल गल एकही, सुमन कुसुम मयमाल ।।६४

सुन्दर गलबहियां दिये, लालन लसे अनूप ।
तन मन प्रान कपोल दृग, मिलत भये इक रूप ।।६५

गौर श्याम बिचरत भये, मनहुँ किहैं इक देह ।
सोहैं मन मोहैं ललन, कोहैं हरतिय नेह ।।६६

पिय कुंडल तिय अलक सों, कर कंकण सौमाल ।
मनसोमन दृग दृगन सों, रहे उरझि दोउलाल ।।६७

यद्यपि दंपति परसपर, सदा प्रेम रसलीन ।
रहे अपनपौ हारिकै, पै पिय अधिक अधीन ।।६८

श्याम बरण अम्बरन को, सुकृत सराहत लाल ।
छरा हरा अँग रागभो, चाहत नैन बिशाल ।।६९

जो हिमहूँ को नामसी, कोउ उचरत सुखकन्द ।
तिहि मुख की मुखके ओर हित चितै रहत रघुचंद । ७०

जनकनन्दनी नाम नित, हितहिय भरि जो लेत ।
ताके हाथ अधीन ह्वै, लाल अपनपौ देत । ७१

प्राण प्यारी ललित पग, धरत फिरत जिहिठौर ।
ताहि दृगन हित बिवश ह्वै, लावत नवलकिशोर ।।७२

हार पदिक कुण्डल तिलक, कबहुँ अंक तनतीय ।
छिनही छिन विनहीं ठरे, रहत संवारत पीय ।।७३

कबहुं उड़ावत भ्रमर पिय, हाँकत कबहुँ बयार ।
प्राण प्रिया हंसि गहतकर, कहत अली बलिहार ।।७४

॥ सोरठा ॥

कुवँर सांवरे गौर, हिय हरने दोउ लाड़ले।
नवल रसिक शिरमौर, रूप भरे बिहरत रहत ॥७५

॥ दोहा ॥

अङ्गराग दै अलिन मिलि, किये ललन तन गौर।
इक छबि ह्वै प्रीतम प्रिया, ललित लसे इकठौर ॥७६
कुसुम क्रीट कबरी गुही, रंग कुमकुम मुख कंजु।
अंजन अजित युगल दृग, नाशा बेसरि मंजु ॥७७
श्रुति कुंडल भल दशन दुति, अरुणा अधर छबिऐन।
हितसों हँसि बोलहीं हिय हरने मृदु बैन ॥७८
भुजगर उर कटि कुसुममय, धरि भूषण पटपीत।
पाँयन नब नूपुर कहौं, ललित लसे दोउ मीत ॥७९
एक चित्त दोउ एक बय, एक नेह इक प्राण।
एकरूप इक बेश ह्वैं, क्रीड़त कुवँर सुजान ॥८०
रीझि चितै चित चकित ह्वैं, रूप जलधिसी बाल।
बारत लाल तमाल दुति, अङ्क माल दै माल ॥८१
सब अपने भूषण बसन, अपने ही कर लाल।
लाड़िली अङ्ग बनाइ छबि, निरखहिं नैन विशाल ॥८२
कबहु अचानक आय दृग, मूदत नवल किशोर।
छलसे गहिलीनों मनों, निज हिय हरने चोर ॥८३

कबहुँ निहारत नृत्य सुख, ललन आइ तिहि गेह।
जहँ चातुर पातुर अली, गावत पिय नवनेह ।।८४

कबहुँ तहां हिय उमगि दोउ कुवर करत कलगान।
अलीरूप रागिनि तहां, बारत अपने प्राण ।।८५

कबहूँ चितै दोउ परस्पर, रूप जलधि से गात।
रीझत बारत अपनपौ, कहत बिवस ह्वै जात ।।८६

।। सोरठा ।।

करहिं अली रसपान, जिनके जीवन कुवंर दोउ।
बारहिं तन मन प्रान, निरखि निरखि नवनेह छबि ।।८७

।। दोहा ।।

इहि विधि बिलसैं रैंनि दिन, युगल कुवंर रसरासि।
दिव्य अमल आनन्दमय, परे प्रेम की पासि ।।८८

समय पाय सिय मिलन हित, आई गुरूपुर नारि।
रहसि कहत चित चकित ह्वै, छबि सो भाग्य निहारि ।।८९

एरी सिय बरणौं कहा, तब सौभाग्य अपार।
लग्यो रहत बहुरूप धरि, हरि जाके आधार ।।९०

नयन मीन कच्छप उरज; अरू नृसिंह कटिठौर।
कृष्ण केश हियराम बलि, बामन तोसम और ।।९१

कोटि कोटि ब्रह्मांड को, एकै ईश्वर जोइ।
तेरी हित चितवन सिये, चहे निरंतर सोइ ।।९२

ब्रह्मशक्र शिव मुनिन के, जो जीवन धन पीय।
ताकी तू जीवन जरी, शील सागरी सीय ॥९३

ब्रह्म रूद्र सुरगण सबै, रहत जासु बसदीन।
सो पिय मुख निरखत रहें, सिय तेरे आधीन ॥९४

बात कहत रसकेलि की, ढिग गुरूजन लजिजीय।
दै निज भूषण नगन मुख, कह्यो मौनशुक सीय ॥९५

॥ पुर बधू बचन ॥

चित इत उत चितवत नहीं, तो गुनमति अतिभीन।
भई उदासी भवनते, तैं दासी करि लीन ॥९६

तेरी छबि हेरी जबै, एरी बलि अलि सीय।
चेरी ह्वै नेरी रहे मेरी मति दृगतीय ॥९७

तू सिय भाग सुहाग सुख, रूपशील गुण रासि।
पग्यो सदाजिहिं प्रेम सों, लग्यो रहैं पिय पासि ॥९८

तेरे हित ब्रत हीय धरो, अस अधीन ह्वै वाल।
तिया नामकी वस्तु अंग; परसि लजावत लाल ॥९९

जानकी है तोसी तुहीं, नहि समकहुं कोउतीय।
जा कहुं परसत स्वप्नहू, औरन चितई पीय ॥१००

तू पिय के जीय में बसी, बसे जीय तब पीय।
दोऊ इहि उरझनि रसे, लसे अलिन के हीय ॥१०१

॥ सोरठा ॥

अली सुकृत को ऐन, सबै धन्य ये सहचरी ।
नित निरखत हैं नैन, प्रीतम समतेरे सुखनि ॥१०२

॥ दोहा ॥

बीतत पलपल कल्प सम, उठति न लखिपुर बाल ।
आतुर चित रबि ओर तकि, तुरंग न तारतलाल ॥१०३
कबहुं रीझि प्रिय प्रेम पर, सियतन रूप निहारि ।
कहन लगी रसरंग पगी, अली अपनपौ वारि ॥१०४

॥ सखी बचन ॥

तब आनन दृग अर्पिसिय, आन न जानत तीय ।
तेरी आनजु कहत हौं, भल बस कीन्हे पीय ।।१०५
तेरी छबि देखत बिवस, वारि सुसर्बस सीय ।
आतुर चितवत और कछु, इतउत चितवत पीय ॥१०६
सिय जानी रानी तुहीं, सुखखानी प्रवीन ।
मानी छबि पानी किये, रसदानी दृगमीन ॥१०७
हौं वारी सौभाग्य पर, जनक दुलारी बाल ।
चेरी चेरी को चहै, मुख तेरी कों लाल ।।१०८
सर्बस तोहिं अर्पेउ पिय, तूं चित लियो चुराय ।
तौतो बिन उनके अली, नहि कछु सीय सुहाय ॥१०९
प्याइ प्रेम मादिक प्रबल, तें प्रिय सुधि बिसराइ ।
करि बस बांधे गुनन सों, तऊ तुहीं मनभाइ ॥११०

बधे एकहूँ ठौर कोउ, सो पर बस ह्वै दीन ।
सब अंगन लालन बँधे, क्यों न होय आधीन ।।१११

बँधो हिय तब रसन सो, बंध्यो श्रवन कलबैन ।
अलि जानकि त्वचा परस रसरूप बँधे दृगनैन ।।११२

।। सोरठा ।।

बँधे रसिक शिरमौर, नाशा अङ्ग सुबास सो ।
रसना चाहत और हैं रसना कहु रस बँधो ।।११३

। दोहा ।।

अरुण वरण तव चरण नख हैं कि तरुणि शिरमौर ।
अनुरागी दृग लालके, बसे लसे इहि ठौर ।।११४

जावक पावक रंग छबि, निरखत अलि अनुराग ।
मनुमन भावन प्रेमरस, पावन पायन लाग । ११५

गति गायनि पायनि परसि, करि नूपुर झंकर ।
पिय हिय हरने मंत्र को, करत सुचारू उचार ।।११६

जंघ युगल तव जनक जे, अकिगृह उत्सव रंभ ।
पिया प्रेम के भवन के, किधौं सुन्दर बरखम्भ । ११७

गुरु नितम्ब कटि सिंह मिलि, पट गौतमी प्रबाह ।
किंकिणि मुनिगण अमर निज, मन अन्ह वावतनाह ।।११८

नाभि गँभीर कि भ्रमर यह, नेह निमग्न माहि ।
ता महँ पिय मनमगन ह्वैं, नेकहुँ निकरचो नाहि ।।११९

हे अलि सुन्दर उरजयुग, रहे तब उरजु प्रकाश ।
नवल नेह के फन्द द्वै, अकिपिय सुख की रासि ।।१२०

लस्यो श्याम तब तन कस्यो, कंचुकि बसन बनाय ।
राखे हैं मनो प्राणपति, हिये लगाय दुराय ।।१२१

सिय तेरे गोरे गरे, पोति जोति छबिछाय ।
मनहुं रंगीले लाल की, भुजा रही लपटाय ।।१२२

कुसुमित भूषण नगन युत, भुज बल्लरी सुबास ।
लालन बीच तमाल के, कन्धर कियो निवास ।।१२३

चक्र तरौना भौंह युग, अलि बलि दृग मृग जोर ।
रदन अमीकण बदन तव, शशिरथ पीय चकोर ।।१२४

रघुबर मनोरंजन निपुण, गंजन मद सरमैन ।
कंजन पर खंजन किधौं, अंजन अंजित नैन ।।१२५

नथ मुक्ता झलकत पगे, नाशा स्वास सुबास ।
उरझि परयो यह पीय मन, मनहुँ प्रेम के पास ।।१२६

तब अलि झलकत अलक अकि, रस शृङ्गार कि धार ।
श्याम भये रंग भीजि तिहि, प्रीतम प्राण अधार ।।१२७

।। सोरठा ।।

तैं तनधारी तीय, सुख सारी बर बरण की ।
करत प्रशंसा पीय, हिय में याके भाग की ।।१२८

॥ दोहा ॥

सब दिशि कंचन मय करत, तव तन जोति अनूप।
मनु झरि झरि अंगन परै, अङ्ग न मावै रूप ॥१२९

सिय तव रूप अपार पिय, पियत न नैन अघाय।
भये चहत सुरराज से, हिय रे अति अकुलाय। १३०

रूप भार गुण भार नव, योबन भारहिं पाइ।
क्यों सहिहैं दृग भार तो, निरखत नाह दुराइ ॥१३१

वारि अपनपों दृष्टि तैं, डरि अलि कछूक होन।
रहत उतारत हीय महिं, पियहूं राई लोन ॥१३२

सर्बस वाँरत बिवश ह्वै, तेरी छबिहिं निहार।
बारि बारि पीवत रहत, बारि बारि पिय बारि ॥१३३

तूं सिय पिय के रंग रंगी, रंगे पीय तव रंग।
रहे अली इक रूप ह्वै, ज्यों जल मिले तरंग ॥१३४

कबहुँ कहत पुर वधुन सों, निजहिय हित की बात।
स्वामिनि के गुणगण सुमिरि, किंकरि गातन मात ॥१३५

॥ किंकरी बचन ॥

हम सम धन्य न और भूवि, भरे भाग्य भरिपूरि।
जिनके सियसी स्वामिनी, पियकी जीवन मूरि ॥१३६

हैं हमरे बलजात कुल, सिय पद कल जल जात।
पुण्य व्रत सुख व्रात पुनि, तात मात हित भ्रात ॥१३७

कृपा अमिय मय दृष्टि सों, करत रहत नित पोष ।
कबहुं न हिय में धरत हैं, अपने देखे दोष ॥१३८
अवगुण निधि हम हैं सही, एकहि गुण कमनीय ।
पति आधीन सुनायिका, लही स्वामिनी सीय ॥१३९
स्वामिनि के बल गर्वसों, हम न गनत हैं काहु ।
रहत नित्य निर्भय भई, प्रतिदिन अधिक उछाहु । १४०
हमरे शिर पै स्वामिनी, होउ सदा यह सीय ।
जन्म जन्म हम किंकरी, रहैं चहैं निज हीय ॥१४१

॥ सोरठा ॥

धरैं सीयपद ध्यान, यहि बिधि मंजु समाज सुख ।
बसहिं पीय के प्राण, प्रेम प्रगट तेहिं भक्तिमय ॥१४२
सिय मूरति जेहिं हिय बसी, तापहिं नैन बिशाल ।
उरराने आवत चले, पारावत से लाल ॥१४३
जनक सुतासम देवता, कहौ कौन जग और ।
जाके बस रघुबीर पिय; ब्रह्म रूद्र शिरमौर ॥१४४
योग यज्ञ तप नेमब्रत, त्याग त्यागिये दूरि ।
होय अनन्य ब्रत सेइये, श्रीजानकि पद धूरि ॥१४५
हौं अल्प कृशसेव बिनु, दीन जानि करू नेहु ।
सकल सुकृत मिलि सीयपद, धूरि भूरि फल देहु ॥१४६
उमारमा सरस्वति सची, जिहिं बिभूति के रूप ।
जयति सिया अह्लादिनी, शक्ति शक्तिगण भूप ॥१४७

ए अलि नेह प्रकाशिका, बचन हिये में राखि।
त्रिविध सजाती भक्त बिना, जिन कतहुँ कछु भाखि ॥१४८

॥ सोरठा ॥

दम्पति नेह प्रकाश, कथा सजिवन अलिन की।
ह्वै वहैं परिहास, आन श्रवण मुख परत ही ॥१४९

॥ दोहा ॥

कहत सुनत पुनि गुनत जिहि, हिय दम्पति दरसाहिं।
सियवर नेह प्रकाशिका, बसै सदा उर माहिं ॥१५०

प्रगटि नव श्रुति सिंधु शशि, गणित समय शुभ सोई।
दुख हरनि मंगल करनि, भक्ति वितरनि होई ॥१५१

यह मन नेह प्रकाशिका पुरि भुरि हिय आस।
करहु लड़ैती लाल के, चरण दास के दास ॥१५२

॥ दोहा ॥

जनकलली की सहचरी बालअली विख्यात।
बन्दौं तेहि पद युगल शुभ सोभित सुठि जल जात॥

इति श्रीमच्चरणदासानुजीवी श्री बालअली कृत
नेह प्रकाश सम्पूर्णम्-शुभम्



॥ मंगला चरण ॥

॥ दोहा ॥

श्रीसतगुरुहिं प्रनाम करि, पावन परम पराग ।
बंदि बिमल बर बोध सुख, निर्बिरोध हित राग ॥
श्रीकरुनाकर कृपिनजन, पालकपन निर्हेतु ।
बन्दों सतगुरु बार बहु, भवनिधि दुस्तर सेतु ॥
श्रीमारुतनंदन शिवा सहित, शंभु सुखकन्द ।
सुमिरों सियपिय प्रेमप्रद, हरन अखिल अघद्वन्द ॥
श्रीगौरीशसुवन सरस, सदन सुमति गुनऐन ।
मंगलकरन सुचरन नित, नमो मथन मदमैन ॥
श्रीवानी सियराम गुन, कलित कला लयलीन ।
बीना पुस्तक कंजकर, प्रनमों सुपद प्रवीन ॥
चहुँयुग माहिं सुसंतजे, रसिक नाम अभिराम ।
तिन पदपंकज नमोनित, दायक उर अभिराम ॥
परते पर पावन परम, अगजग जीवन जान ।
बन्दों सीताराम निज, नाम महामुद खान ॥

॥ श्रीसद्गुरुवे नमः ॥

संत विनय शतक

श्रीसतगुरु सिरताज पद, बन्दौं बारहि बार।
दीजे युगल अनन्य को, नाम नेह निज सार ॥
श्री श्रीसिय रघुवीर के, प्राण पियारे वीर।
श्री हनुमंत दयाल ह्वै, दीजे नाम गंभीर ॥
श्रीमुनिराज अगस्त जू, अति कृपाल गुन ऐन।
अगुनि समुझि मोहि दीजिये, नामरमन दिनरैन ॥
श्रीनारद तारद विशद, सिय पिय यश दातार।
युगलानन्य अजान को, दीजै नाम अधार ॥
बन्दौं सनकादिक चरण, हरन अमंगल मूल।
दीन खीन लखि दीजिये, नाम प्रेम अनुकूल ॥
श्रीमुनि शुभ लच्छन सहित, सरस सुतीछन पाय।
बंदि सदा जांचौ इहै, नाम सनेह सुभाय ॥
श्री बशिष्ठ महाराज गुरु, सुपद नमो शतवार।
दीजै दीन दयाल मोहि, नाम रटन एकतार ॥
श्री शंकरषन शेष पुनि, श्री रामनाम तद्रूप।
बार-बार बन्दौं समुद, दीजे नाम अनूप ॥
श्री श्रीकाशीनाथ पद, पंकज नमो सप्रेम।
नाम लीन सम मीन जल, देहु नाम जप नेम ॥

श्री बलिराज बिचित्र गुन, ध्रुव प्रह्लाद पवित्र ।
बन्दौं चरण सरोज नित, देहु नाम रसचित्र ।।
श्रीसियराम सनेह सुख, भाजन निखिल कपीश ।
सुपद वन्दि मांगत सतत, देहु नाम बकशीश ।।
बिशद विभीषण पद कमल, प्रनमो सहित सनेह ।
दीजै युगल अनन्य को, नाम रटन गुन गेह ।।
भीषम आजारज ललित, आरज चरण मनाय ।
मांगत हों वरदान इह, रहों नाम लय लाय ।।
अवध निवासी एकरस, रसिक युगल रसधाम ।
तिनहिं बन्दि बहुबिनय युत, याँचत नामललाम ।
श्रीशुकदेव दयाल दृग, दानी रहस अनूप ।
याँचत तिन पद प्रनति कर, नाम रटन गत धूप ।।
श्रीमुनिनायक व्यास, श्रीपारासर तप रास ।
बार-बार बन्दौ सुपद, कीजे नाम प्रकाश ।।
श्रीसुख सौंपन सीम सुचि, भरत बिकार बिहीन ।
नमो नेह युत दीजिये, नाम नेह पन पीन ।।
श्रीगननायक बुद्धिवर, बरघन नाम निवास ।
दीजै दिन मनि नाम नित, नमो समेत हूलास ।।
श्रीसूरजशशि नखत गन, सुमनस सकलमनाय ।
मांगत मोद प्रमोद निधि, नाम रमन अधिकाय ।।

श्री बिरंचि विज्ञान घन, रामनाम निज नेह ।
निरत निरन्तर बन्दि पद, याँचो नाम सनेह ।
श्रीमुखचार सुवन सकल, बन्दौं बार हजार ।
दीजे युगल अनन्य दृढ़, नाम रटन एकतार ।।
श्रुति संहिता पुरान प्रिय, आगम ग्रन्थ अनन्त ।
निशि दिन नाम निवासप्रद, प्रेम नमो छविवन्त ।।
श्रीमद्रामायन सुपद, पंकजो नमो सप्रेम ।
युगलानन्य निजोर लखि, नाम देहु पद छेम ।।
श्रीकोकिल मुनि रहसनिधि, बालमीकि गुनखान ।
पद पंकज प्रनमामि नित, दीजे नाम प्रधान ।।
याज्ञवल्क भरद्वाज मुनि, ऋषभदेव अवतार ।
सब सन याँचत जोरि कर, दीजे नाम उदार ।।
चतुर्विश अवतार तिमि मनु कंदब रिषिराज ।
सबके पद पंकज नमो देहु नाम छबि छाज ।।
धर्मराज श्रीराम गुन ज्ञान निवास हमेश ।
नमो नेह चहि वितरिये राम नाम आवेश ।।
श्रीमिथिलाधीष निमि महाराज प्रमुखपद बन्दि ।
मांगत सियवर नाम रुचि सुचि सुप्रीति निजछंदि।
श्री श्री श्रीसरयू सरस सहित अवध पद ध्याय ।
मांगत श्रीसियवर ललित नाम रटन लयलाय ।।

श्री कामदगिरिराज श्री मिथिला रहस निवास।
सुपद सनेह समेत नति करत पूरिये आस ।।
और चाह सपनेहुं नहीं चाहों नाम उमंग ।
दीजै युगलअनन्य कहँ भजन भावना रंग ।।
श्री श्रीसुचि परिकर युगल सुयश सजीवन खान ।
तिनहि नमो नित नेह युत दीजै नाम निधान ।।
और जिते श्रीनाम के रसिक देव मुनि संत ।
तिहुँ जुग जाहिर नमो नित देहु नाम रसवंत ।।
शिवा शांभवा शारदा रमा, प्रमुख सब शक्ति ।
बन्दों चरण नलिन सदा, देह नाम भल भक्ति ।।
जिनको सबसे अति अधिक, मधुर लगत निज नाम ।
तिन पद पनही सुरज, मम भाल लसत अभिराम ।।
नामी संत अनंत युग जेते, सत सुख सिन्धु ।
बन्दत युगलअनन्य तिन, सुन्दर सुपद सुगन्ध ।।
सब सन यह वरदान नित, यांजत युग कर जोर ।
नाम नेह हरदम रहे, रहित काममय मोर ।।
श्री श्री रामानुज सुभग, स्वामी सुपद प्रणाम ।
करों भरों आनन्द उर, पावों नाम ललाम ।।
जेते श्री मारग निपुण, आचारज गुन ऐन ।
नमो निरन्तर दीजिये, राम नाम चित चैन ।।

श्री श्रीरामानन्द प्रभु, तारक राम स्वरूप ।
तिन सरसीरुह चरण नित,नमो समन तम कूप ।।
कोटिन बार प्रणाम करि, मांगत दास दयाल ।
रैन ऐन सुमिरन सधे, बंधे सुरसना हाल ।।
श्री श्री अमित प्रकाशमय, अमल अनंतानन्द ।
बन्दौं युगल सरोज पद, दीजै नाम अमन्द ।।
श्री श्री सब सुख सार श्रुति. नाम ज्ञान छवि धाम ।
बन्दौं कलित कबीर पद, यांचौ नाम निकाम ।।
श्री कबीर रस धीर के जे, नेही निज राम ।
शिष्य सकल तिनको सतत,बन्दत हित परनाम ।।
श्री प्रद पैहारी चरण हरन, अखिल अघपुंज ।
बार-बार बन्दौं सदा दीजै नाम निकुँज ।।
श्री स्वामी सर्वेश गुण, मंडित अग्र अनूप ।
बन्दों पद पंकज सदा, दीजे नाम स्वरूप ।।
कठिन काल के भाल पर, दिए सुपद रमनीय ।
बन्दों कील कृपाल नित, दीजै नाम अमीय ।।
श्री श्री केवलराम सुखसागर दया निधान ।
विदित लोक द्वारा, बिषद देहु नाम रसखान ।।
श्री पीपा प्रीतम परखि पायो प्रभा परेश ।
नमो चरण कमनीय, द्रुत दीजै नाम सुदेश ।।

श्री रैदास प्रकाशनिधि, अगम अथाह स्वरूप ।
पारस तजि दियो तृण सदृश तिन पद नमो अनूप ।।

युगलअनन्यशरण सदा याँचत नाम दयाल ।
दीजै निज सेवक समुझि शमन सकल शकशाल ।।

श्री श्री सदन सघन सरस नेही नाम प्रधान ।
बन्दौं बार सहस्र पद दीजै नाम निशान ।।

बाल्मीकि सुचि स्वपच कुल तारक त्रिगुण अतीत ।
बारहिं बार प्रणाम मम दीजै नाम अजीत ।।

श्री दादू दरयाब दिल दुर्मति दलन दुरूस्त ।
बन्दत युगलानन्य नित दीजै नाम निशस्त ।।

श्री रज्जव सुन्दर सुभग बचन हरन जगलाल ।
दीजे नाम सनेह मोहि संतत दीन दयाल ।।

श्री शुकदेव दयाल के सेवक अति सुखरास ।
चरन दास पद नति सतत दीजै नाम सुवास ।।

श्री बेनी बाजिन्द बरन हरन हिय ध्यान ।
धरन तरन तारन हमें दीजै नाम प्रधान ।।

श्रीसंत सहित सुनाम रस रसिक संत सुचि दास ।
प्रनमो पद अरविन्द नित दीजै नाम प्रकाश ।।

श्री श्री राम चरण हरन भव भय नाम निकेत ।
तिन पद पंकज नमो नित दीजै नाम सहेत ।।

और संत जे नाम रस नेही संत सुभाव ।
रास सुजन चेतन प्रमुख बन्दि सुजांचत नाव ।।

श्री जगजीवन दास सुख रास नाम रस रूप ।
तिन पद मम नित नित लसे दीजै नाम अनूप ।।

श्री दूलन अन मूल गुन, सहित रहित शकशूल ।
नामी सरस सुभाव सुचि, बन्दौं प्रभु अनुकूल ।।

नाम सजीवन मूरि मोहि, कीजे अब बकशीश ।
नवल दास युत कृपा,करि बन्दौं पद धरि शीश ।।

छेमदास छिति छेम कर, कलित गोसाईं दास ।
बन्दौं नाम सनेह हित, संतत सजि विश्वास ।।

सत्त नाम रस रसिक जे, संत अनंत अखंड ।
बन्दौं तिनके पद कमल, पूजनीय ब्रह्मांड ।।

यांचो युग करजोरि तिन, पास सहित अभिलाष ।
नाम रंग रस दीजिये, सब विधि प्रनमत दास ।।

श्री श्री नानक नेह निधि, नाम रहस सुचि सिन्धु ।
वन्दौं तिन पद पंकरुह, अमल अलौकिक बंधु ।।

तिनके नव अवतार सुख, सार बन्दि वहु बार ।
यांचत नाम सुप्रीति गत, काम तैलवत धार ।।

पलटू दास उदास दृढ़ अवध, निवास स्वच्छन्द ।
करामात सागर सुधा, नाम रसिक गत द्वन्द ।।

विरति बलित वर बोध घन, बन्दों तिय युग पाय।
दीजे नाम सनेह मोहि, हरसायत सुखदाय॥
भीषादास गोविन्द गुण, मंडित प्रबल प्रताप।
बन्दों तिन जलजात पद, दीजै नाम सुजाप॥
श्रीश्री मधुर मरन्द निज नाम, रसिक भुज चार।
अद्वितीय बन्दौं, चरण दीजै नाम उदार॥
श्री मुरारि मानस अमल, करन नाम गुण ऐन।
युगलानन्य सनेह सजि, बन्दत पद मुद देन॥
नाम नेह आरत सहित, बेपरवाही संग।
दीजै सुखनिधि कृपा करि, अविचल अमल उमंग॥
श्री सावित सद शौक रस, दासमलूक अचूक।
पिय पायो अति अमल, बिधि देहु नाम माशूक॥
युगलानन्य सुचाह नित, कब रमिहौं निज नाम।
सब सन्तन सन विनय बहु, यांचो वरण ललाम॥
श्री श्री धना धनी सुपद बन्दि, समेत उछाह।
मांगों मन मनमथ हरन, नाम निवारण दाह॥
कनक दास तिमि रंगनिधि, दासपुरन्दर संत।
बन्दौं दीजै नाम रस, हरसायत रसवंत॥
तुकाराम सब पुष प्रभु पुर, पहुँचे अनयास।
नमो सुपद दीजे, सुधासिन्धु नाम अघनास॥

श्री मीरा करमा कलित सुचि, सुरसरी पुनीत।
बन्दौं पद पावन परम, देहु नाम जप नीत ॥
हैं जेती वामा विमल नाम, रूप गुण लीन।
तिनहि नमो नित नेह, युत चाहो नाम नवीन ॥
श्री प्रद पावन पारखी नामी, संत समाज।
सेवन सरस सनेह, श्रीनाम देव छवि छाज ॥
बन्दौं युग जलजात पद, असद दमन दुतिवन्त।
दीजै युगलानन्य को, नाम नेह छविवन्त ॥
श्री जयदेव दयाल सद, सेवक कवि सिरताज।
दीजै युगलानन्य कहूँ, नाम मधुर रसराज ॥
ज्ञानदेव निज नाम के, अचल उपासक धीर।
बन्दौं तिन पदपंकरूह, दीजै नाम गंभीर ॥
रांका-बांका प्रेमनिधि, नाम निरत दृढ़ बोध।
तिन पद मम नति रति सहित, देहु नाम सुखसोध ॥
मानदास आशय अमल, सकल कामना हीन।
बन्दौं तिनहिं सनेह सह, दीजैनाम प्रवीन ॥
भजन निरत भाविक प्रबल, श्रीशुचि पर्वत दास।
नमो नमो तिन चरणरज, देहु नाम सुखरास ॥
श्री श्री रामप्रसाद गुन अगम, अमल सुख सार।
बन्दौं बार हजार पद, पंकज परम उदार ॥

नाम रमन की चाह उर, उत्कंठा दिन रैन।
सो पूरन प्रभु कीजिये, कृपा सिन्धु मृदु बैन ।।
श्री श्री रामचरण चरण प्रनमत, कोटिन बार ।
पावों नाम सनेह सुख, सर्वोपरि रसधार ।।
श्री श्री शंकर दास सुचि स्वामी, मम सिरताज।
रामनाम धन धनद बर, वरद गरीब निवाज ।।
और दौर दुरवाय मम जानि, अनुज निज छोट ।
दीजै नाम प्रकाश, सुख रहे सुमन तेहि ओट ।।
श्री श्री कृपानिवास युग, रुप नाम रसपुंज ।
बन्दौं संतत नेह युत, दीजै नाम निकुंज ।।
श्री श्रीरामसखे सबल, शौकी रूप सुनाम ।
प्रनमत तिन पदकंज, मोहि दीजे नाम सुधाम ।।
लालन लाज रहस्य गुन, नाम लीन जल मीन ।
तिन पद नति मम बार बहु, नाम देहु लखि दीन ।
सूर सकल सिरताज मम, नाम रुप गुण ऐन ।
तिनके पद पंकज प्रनति, मेरी सदा सुखैन ।।
नाम नेह निज कृपा करि, मोहि दीजै सब भांति ।
आठ पहर चौंसठ घड़ी, सुनो श्रवन धुनि कांति ।।
श्रीश्री अखिल अशिव समन, सीतारमण सुदास ।
तारक जीव कदंब कलि, संतत हृदय हुलास ।।

श्री श्री गोस्वामी सरस, तुलसीदास पुनीत ।
पदपंकजरज नमो नित, नाशक अमित अनीत ।।
मेरे प्राण अधार सम; सौंपन सुमति सनेह ।
दीजै दया निकेत मोहि, नाम रटन गुन गेह ।।
श्री श्री सदगुरू दयानिधे नेही नाम समेत ।
तिनहि नमो नित नेह युत, दीजै नाम सुहेत ।।
जे राते माते सुधा सार, नाममधि संत ।
तिनके अमल अनूप पद, नमो नमो छविवंत ।।
चाह नहीं बैकुण्ठ की नहिं, चाहौं गोलोक ।
राम रटन अभिलाष उर, सब मिली करहु अशोक ।।
मैं मतिमन्द असाध्य रुज, ग्रसित कलंक निकेत ।
पै श्री संत सुचरण रज, नमो हमेश सहेत ।।
व्यर्थ बचन वकध्यान धरि, वकत बिताओ जन्म ।
अब सब संतन की शरण, लीन्हों तजि जिय शर्म ।
नाम सुकीरति सुनि श्रवण, सँत सुबाणी संग ।
तेहि हित उपज्यो चाव चित, भली प्रकार उमंग ।।
सो पूरन बिन आप सब कृपा, न होय कृपाल ।
ताते बारहिं बार मम, विनय करों प्रतिपाल ।।
मेरे आन उपाय नहिं, केवल संत अनंत ।
चरण आस दृढ़ एक रस, भेटन हित सियकंत ।।

मम अवगुन दिशि जनि, लखहु देखहुँ विरद पुनीत ।
बाल बिहाल बिचार उर, अपनाओ अविगीत ।।
महा तिमिर कुल कूप से काढि कृपा करि आप ।
धाम निवास अचल अभय, दीन्हीं बिगत विलाप ।
पुनि सुवेष सदग्रंथ गति, नाम रमन की चाह ।
इत्यादिक नाना रहस, दीन्हों कृपा अथाह ।।
राउर गुण परमेश ते अधिक, लसत सब भांति ।
गुप्तप्रकट कारण समुझि,बढ़त प्रीती पन कांति ।।
जौ लौं संत सरोज पद कृपा, कटाक्ष न होत ।
तौ लौं अन्तर्गत तिमिर, नशत न प्रगटत जोत ।।
श्री सीतावर वर बदन वरन्यो, संत परत्व ।
युगलानन्यशरण मनन, करत सहज सुचि सत्व ।।
वृथा विगोबहु वैश वपु, विगत सत पद नेह ।
होय हृदय होशियार नित, साजिये संत सनेह ।।
अन्तर्यामी साथ ही सदा, रहत तउ हाय ।
मिटत न संत पद धूरि बिन, कलप कलाप बिहाय ।।
जो चाहे भव तरन को तिमि, सियवर भल भेट ।
तौ सब आस निरास करि, पद पराग मघिलेट ।।
संत सोइ जिनके सदा, सुमिरत नाम रसाल ।
पलक पड़े पावे नहीं, बिछुरत हाल बिहाल ।।

ऐसे संत उदार जे चहुँ युग, लोक अनन्त ।
तिहूँ काल तिन पद नमो, असद दमन दुतिवन्त ।।
युगलानन्यशरण रच्चो, विनय शतक शुभ रुप ।
पढ़ि सुनि उपजे संत, पद प्रेम नेम रस भूप ।।
तीनों समै सनेह सह जे, जन सतक सनेम ।
पढ़े सुने कछु दिन, अवसि पावे नाम सुप्रेम ।।
संतन की कीरति कलित ललित, सुनत सियलाल ।
और कहो किमि नहिं सुने, समन सकल जगजाल ।।
मान मोह मत्सर मदन कदन, सुयश शुचि सन्त ।
युगलानन्यशरण हृदय, दायक दुति सियकन्त ।।
श्री सरयू तट गुप्त हरि, निकट कपट पट त्यागि ।
सेवो संत प्रसाद से, नाम धाम पन पागि ।।
सरयूतीर सुमध्य दिन प्रतिपद, फागुन मास ।
शुकुल पक्ष शशि दिन, भयो पूरन शतक विलास ।

इति श्रीयुगलानन्दशरण विरचित संत विनय सत

सम्पूर्णम्ः



।। श्रीजानकीबल्लभो विजयते नमः ।।

।। आचार्य वन्दना ।।

पूर्वाचार्य जे सहचरी, नित्य धाम वसि हेरिये ।
जनक लड़ैती के प्रिये, मोहि भरोसो तेरिये ।।१
बन्दौं गुरू परमेश, जिनकी महिमा को कहे ।
थके गनेश महेश सारद शेष रमेश युत ।।२
वन्दौं श्री मत्मारुति, जिन सम रसिक न आन ।
दया दृष्टि मोपै करो, दरसावहु रस ज्ञान ।।३
बन्दौं श्री मज्जगद्गुरु, रामानन्द महान ।
रसिकन पंकज के लिए, उदित भानु भगवान ।।४
अनंता नन्दाचार्य जू, प्रनवउँ बारम्बार ।
दया करो दरसै हिये, सिय पिय रूप उदार ।।५
श्री पयहारी पद कमल, बन्दौं बारम्बार ।
चिरजीवी अजहूँ दरस, कीन्ह जगत उपकार ।।६
बन्दौ आग्राचार्य वर, श्री चन्द्रकला अवतार ।
हम दिनन को दीन जो, दुर्लभ रस श्रृङ्गार ।।७
नाभा अलि पुनि बाल अलि, प्रेम कलि पद ध्याऊँ ।
रस माला श्री रुप सखी, मधुर प्रिया गुन गाऊँ ।।८
राम सखे अरु प्रेम सखी, हरि सहचरी पद बन्दी ।
बन्दौ कृपा निवास पुनि, सुधा मुखि अभिनन्दी ।।
रामचरण सखी युगल प्रिया, रसिक अली रसखान ।
देव सखी वन्दन करौ, दरसाइये रस ज्ञान ।।

बन्दौ हेमलता अलि, प्रीती लता रसि केश।
युगल विहारिणी करु कृपा, सुझै रहस विशेष ।।११
सिया अली ज्ञाना अली, रुप कलाहि धरिध्यान।
राम प्रिया मधुकर अली, करऊँ विमल गुणगान ।।१२
युगल अली पुनि नवल अलि पद सु ध्यान।
प्रेम मोद अरु प्रिया सखी, दीजे रहस निदान ।।१३
सन्त प्रवर सिय भूमि के, बाबा सिद्ध सुनाम।
जिनके भाव ते प्रगट भये, पीय गौर सियश्याम ।।१४
श्रीमती माधुर्य्यलता, महल टहल पर देहु।
आचार्या रसमोद लता, मोहि आपनि करिलेहु ।।१५
प्रेमलता जू के पद कमल, बन्दौं बारम्बार।
श्री सियराम सुशरन जू, पद रज सिर उरधार।१६
बन्दौं श्रीरसकान्तिलता, रसिक शालि रस खानि।
जुगल नाम सुखधाम निरन्तर, रटति रहत मस्तानि।१७
वन्दौं श्री रसरंग लता, सदगुरु जीवन प्रान।
सिय पिय सेवा में निरत, भाविक बड़े सुजान ।।१८
बन्दौं सबके पद कमल, सदा जोरि जुग पानि।
सब मिलि के करिये कृपा, लघु तर किंकरि जानि।१९
गुप्त प्रगट छोटे बड़े, और जे रसिक सुजान।
सबके पद बन्दन करौं, वर दीजै रस ज्ञान ।।२०

इति आचार्य वन्दना सम्पूर्णम्

卐 संक्षेप कवित्त श्रीनामपरत्व 卐

।। कबित्त ।।

मेरो मन कहूँ श्याम सुन्दर सों लागिहै ।। प्रेम मकरन्द पूरि सुपद बिलोकि जानु, जंघ कमनीय कटि आभरन रागिहै । नेहनिधि नाभि नैन निरखि अनूप उर, त्रिवली तरंग बीच जानि अनुरागिहै ।। कंठ कमनीय कल चिबुक कपोल द्विज,वदन बिचित्र बिधु हेरिताप त्यागिहै। (श्री)युगल अनन्य बाम दाम सुसनेह सम, मेरो मन कहूँ श्यामसुन्दर सों लागिहै ।।१।।

सोई सीताराम सों सनेह साँचो किये हैं । जिन्हें जग जाहिर जहर ज्वालमाल लगे,पगे प्रिय पावन परत्व प्रेम पिये हैं।। सीय श्याम सेवा सानुकूल शूलभूल बिना, बिबिध विकार ब्यवहार पीठि दिये हैं । जानकी-जीवन जू को कलित गुनानुबाद, गावत उमंग सजवाय लाह लिये हैं ।। (श्री)युगल अनन्य स्वच्छसार संहितादि मत, सोई सीताराम सों सनेह साँचो किये हैं। २।।

सहस पचीस लों जपत जौन जीह नाम, राम अभिराम ताहि मंगल अवेशेहैं। जाके नेम अचल पचास सहसाधिक है, सो तो देव देविन ते पूजित बिशेषहैं। जौन अनुरागी बड़भागी के सुनेम लक्ष, सो तो परत्यक्ष स्वच्छ रहित अंदेशे हैं । (श्री)युगलअनन्य ताकी महिमा बखाने कौन, जाके सुखसागर की रटन हमेशे हैं ।।३।।

नाम तो अनन्त तामें रामनाम भूप है। नारायण आदि नाम कहे कोटि वार तऊ, तुल्यता न होत नाम बारक अनूप है। और नाम देत भुक्ति मुक्ति बिष्णुलोक लगि, रटे राम नाम देश पावै रसरूप है ।। कीजिये न हठ सठपन छोड़ि दीजे नाम,परम पियूष और मत अन्ध-कूप है। (श्री युगलअनन्य साँच बदत बजाय बात, नाम तो अनन्त तामें राम नाम भूप हैं ।।४।।

और नाम दीपक मशाल तारा शशि सम, राम-नाम सूर शत सहस समान रे। और नाम शिता कंद मधु मीठ मिसरी सों, रामनाम स्वच्छ सुधासार रस-खान रे ।। और नाम तन धन सदृश सोभायमान; राम नाम प्रबल प्रधान पंच प्रधान पंच प्रान रे। [श्री]युगल अनन्य और नाम हैं बराती सम,रामनाम दंपति बिचारु त्यागु मान रे ।।५।।

और नाम अपर मनीन के समान स्वच्छ, राम-नाम चित चिंतामनी चाहि चाह रे। और नाम रैयत दिवान औ वजीर सम,रामनाम अचल अखंड वादशाह रे ।। और नाम शिष्य सद समता सजाये सदा, राम-नाम गुरु गुन अगम अथाह रे। [श्री]युगलअनन्य और नाम दिन चारि प्यार,रामनाम एकरस नित्य निरबाहरे।।६

सहस करोरि वेर द्वारिका प्रयाग जाय, पदुम अनेक वार कासिका विहारहीं। मथुरा अवन्तिका अरब औ खरब वार, मायापुरी कच्छप समान दृग धारहीं ॥ जगन्नाथ बदरी केदारनाथ आदि सब,तीरथ सुछेत्र जाय पदुम अपारहीं । [श्री]युगलअनन्य तउ एक वार राम-नाम मुख के उचारे सम कहे पाप भारहीं ॥७॥

ताहि पर वार वार कोटिन तलाक है ॥ चारो युग बीच मीच मद को मलनहार,नाम सुखसार तरवार धार धाकहैं। यामें जो मरमधुर धरमधुरीन जन,जानत सुजान जौन दिब्य दिलपाक हैं ॥ माया मल मद माँझ मोह्यो जाको चित्त तौन, लखि न सकत नाम महिमा अचाक है। [श्री] युगलअनन्य जाहि रुचत न रामनाम ताहि पर वार-वार कोटिन तलाक है ॥८॥

नाम के रटन बिन छूटत न दाग है । चाहो चारो ओर दौर देखो गौर ज्ञान हीन, दीनता न छीन होय झीन अघ आग है। जहाँ तक साधन सुराधन बिलोकिये जू, बाधन उपाधन सहित नट बाग है ॥ तीरथ की आस सो तो नाहक उपास्य हेतु, एक बार राम कहे कोटिन प्रयाग है। [श्री]युगलाअनन्य इत उत भ्रम श्रम दाम, नाम के रटन बिन अछूत न दाग है ॥९॥



॥ सवैया ॥

नाम सजीवन मूरि मनोहर,खाय बिना मृत प्रान न जागे।
सन्त सुसङ्ग सजाय बिना, भ्रम भावना भूत भयान न भागे।
धाम सिरोमनि सेये बिना, सिय वल्लभ रूप सुपाग न पागे।
[श्री]युग्मअनन्य निचोरि सुकोटिन,बैनभन्यो कुछ शेष न आगे

। कवित्त ॥

सीताराम सरस सनेह रसरूप नीर, सरयू सरित शुचि स्वामिनी निहारिये। भागीरथी गावें गुन नर्मदा निहारे नैन, वैन चैन दैन कृष्णवल्लभा बिचारिये॥ कावेरी सु कंज कर लीन्हें पानदान चन्द्रभागा स्वच्छ सुरभि सु भाजन सुधारिये। [श्री] युगलअनन्य लोक निखिल सरित सिंधु सेवे पद कमल अमल बलिहारिये।

॥ दोहा ॥

सीताराम नाम ही में वेद संहिता पुराण।
ध्यान भावना समाधि सरसतु है॥
सीताराम नाम ही में तत्व भांति योग।
यज्ञ पर व्यूह विभव स्वरूप परसुत है॥
सीताराम नाम ही में पांचौ मुक्ति भुक्ति।
वरदायक विचित्र एक रस दरसुत है॥
श्रीयुगल अनन्य सीताराम नाम ही में।
मोद विशद विनोद वार-वार बरसह हैं॥

प्रकाशित पुस्तकों की सूची—

श्रीसीताराम युगल सहस्त्रनाम श्रीभुशुण्डि रामायणान्तरगत

१—जानकी बिन्दु	श्री देव स्वामीजी
२—द्वादश मास उत्सव	श्रीविदेहजा शरणजी
३—मधुर पदावली	श्रीसिया अलीजी
४—प्रेमरस पदावली	श्रीविदेहजा शरणजी
५—वृहद अष्टयाम पदावली	पूर्वाचार्यों की संग्रह वानी
६—सीताराम वर्षोत्सव	,, ,, ,,
७—रसकान्ति अष्टयाम	,, ,, ,,
८—श्रीसिया सहस्त्र नाम	श्री सियाशरणजी मधुकर
९—श्रीराम सहस्त्र नाम	,, ,,
१०—श्रीमिथिला मधुर विलास	पुर्वाचार्यों की वानी

॥ पद ॥

सन्तन चरन धूरि जो पाऊँ।
शीस चढ़ाय लगाय दृगन सों पाय हृदय निज सरस बनाऊँ।
सुरसरि अघ छूटत जिन परसे तिन संतनयश केहि मुख गाऊँ
संत समाज तीर्थ सेवन कर उज्जवल रस सागर अब गाऊँ।
संतन को चरणामृत लै लै उर विच सरिता प्रेम बढ़ाऊँ॥
सन्तोचिष्ट पाय श्रद्धा सों जनम जनम त्रयताप नसाऊँ।
सन्तन अनुगत ह्वै 'बाँके पिय' संतन की अनुचरी कहाऊँ।
प्रिया प्रीतम निकुंज रस लीला अवलोकन कर नैन सिराऊ

मनीराम प्रिंटिंग प्रेस, शास्त्रीनगर—अयोध्या।